ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०८१ मार्च २०२५

₹ ३०

कविता

नेह रंग से होली

– डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

आओ साथी खेलें मिलकर,
नेह रंग से होली।

द्वेष भावना की कड़ुवाहट,
भाग जाए हर दिल से।
मधुर वचन की बाँट मिठाई,
गले मिलें सब मिल के।।
हर मन-आँगन में गूँजेगी,
मधुरिम हँसी-ठिठोली।।

कीचड़, गोबर, भद्दी बातें,
बिल्कुल भी ना भातीं।
जोर-जबरदस्ती से मन में भी,
हैं दरार पड़ जातीं।।
इन्हें त्यागकर खाएँ, खिलाएँ,
प्रीत पगी रस-गोली।।

जाति धर्म सब भूल सभी के,
हृदयन्तर को रंग दें।
सबको अपना मित्र बनाएँ,
सबको टोली संग लें।।
लाल गुलाल जब लगे गाल पर,
शत्रु बनें हम जोली।।

इस होली में यदि खुशियों के,
इन्द्रधनुष खिल जाएँ।
कर्म, नियम और श्रम ये तीनों,
अगर साथ मिल जाएँ।।
सज जाएगी जन जीवन में,
प्यार भरी रंगोली।।

– शाहजहाँपुर
(उत्तर प्रदेश)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन २०८१ ▪ वर्ष ४५
मार्च २०२५ ▪ अंक ०९

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

प्रकृति में मूलत: दो ही वर्ण हैं एक श्वेत यानि सफेद दूसरा श्याम यानि काला। पहला प्रकाश का, शुभता का, सत्य का, निर्मलता का प्रतीक है तो दूसरा अंधकार का, अशुभता का, असत्य का, मलीनता का। एक सकारात्मकता का सूचक है तो दूसरा नकारात्मकता का। एक प्रह्लाद है तो दूसरा होलिका। नकारात्मकता कभी भी सार्थक सृष्टि नहीं करती इसलिए काला रंग सारे रंगों को सोंख लेता है जबकि सफेद रंग से सात रंगों की सृष्टि होती है।

सोचिए कैसी लगती यह दुनिया अगर यह रंगहीन होती? शुभ्रता से सात रंग प्रकटे और यह संसार बहुरंगी बन, रंगों से इसकी रमणीयता बढ़ी। ये रंग सृजन का प्रतीक बने, आशा, उमंग, उल्लास और सुन्दरता के प्रतीक बने। इसी से सृजन की देवी सरस्वती का वर्ण श्वेत है।

सात रंगों का अपना महत्व, प्रभाव और विशिष्टता होते हुए भी इनका सात ही बने रहना इन्हें न सुहाया और वे परस्पर घुल–मिलकर असंख्य रंग बनाने लगे। सतरंगी संसार बहुरंगी बना तो और भी निखर उठा। लेकिन रंगों के इस मेलजोल की एक विशेषता पर आपने ध्यान दिया? जब दो या अधिक रंग आपस में मिलते हैं तब अपना–अपना नाम, रूप, स्वभाव, प्रभाव सब छोड़कर एक नया सम्मिलित रंग बनाते हैं। इस प्रकार अपना सारा अहं छोड़कर जब किसी से मिल जाते हैं तो ऐसा मिलना ही समरसता कहलाता है।

रंगोत्सव होली हमें अपने समाज में ऐसी ही समरसता लाने का दिव्य संदेश देता है। हमारी जाति, हमारी भाषा, हमारे आर्थिक स्तर, हमारे प्रांत, हमारी पूजा पद्धति, हमारे रंग–रूप सब अलग–अलग रंगों की भाँति हैं लेकिन जब हम 'समाज' के रूप में एकत्र हो अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं को सामूहिकता में विलीन कर देते हैं तो एक नया रंग बनता है वह है समरसता, जिसमें कोई भेद–भाव नहीं, यही समरसता हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान है।

आइए, होली के रंग खेलते समय अपना मन भी इस समरसता के रंग से रंग लें तभी मनेगी सच्ची होली।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- कण्डा होली -डॉ. सेवा नंदवाल ०५
- रंगबिरंगा हुआ श्वेत वन -विजय जी. खत्री ०८
- ऋजुता को मिली पेंसिल -डॉ. इन्दु गुप्ता २८
- वैभव की मुश्किल -रंजना जायसवाल ३८

छोटी कहानी

- छोटी तितली बड़ी तितली -इन्जी. आशा शर्मा ३५
- बसन्त बोली -हरिन्दर सिंह गोगना ४४

लघु कथा

- दोस्ती की नींव -मीरा जैन ४३
- पेड़ रोने लगा -राममूरत राही ५०

एकांकी

- बच्चों की चौपाल और होली -राजा चौरसिया १२

आलेख

- होली के संदेश झमाझम गूँज रहे -सावित्री जगदीश चौरसिया १६
- अवंतीबाई लोधी -स्नेहलता ३०

प्रसंग

- आदर्श गौसेवा -डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी ४८
- देश सेवक का वेतन -डॉ. विद्या श्रीवास्तव ४९

कविता

- नेह रंग की होली - डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी ०२
- होली का रंग -राजेन्द्र निशेश ०७
- होली में अजब हो गए ढंग -डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' १०
- नव वर्ष -सुधाकर मिश्र 'सरस' १४
- दादाजी -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १५

स्तंभ

- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी १५
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १८
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २६
- छः अँगुल मुस्कान - २७
- लोकमाता अहिल्याबाई होळकर -अरविन्द जवळेकर ३२
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३४
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ४०
- आपकी पाती - ४२
- पुस्तक परिचय - ४६
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४७

बौद्धिक क्रीडा

- दिमागी कसरत -राजेश गुजर ०७
- बताओ जरा २९
- बाल पहेलियाँ -गोविन्द भारद्वाज ३६
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४५

चित्रकथा

- दादी मैं यहाँ हूँ -देवांशु वत्स ११
- निकम्मा -संकेत गोस्वामी २५
- झूठ और शिकायत -संकेत गोस्वामी ३३
- लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे -देवांशु वत्स ३७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कण्डा होली

– डॉ. सेवा नंदवाल

होली पर्व के एक सप्ताह पहले जब मालविका दीदी ने अपनी कक्षा के बच्चों को शिक्षा दी कि होली जलाओ किन्तु लकड़ियों की नहीं, तो विद्यार्थीगण चौंकते हुए मुस्करा पड़े। पराग से नहीं रहा गया तो पूछ लिया ''क्यों दीदी! लकड़ियों की क्यों नहीं? लकड़ी दहन तो होली की महत्वपूर्ण रस्म है।''

मैं समझाती हूँ। ''इसलिए कि होलिका दहन के लिए हरे-भरे वृक्षों की बलि देना बिलकुल न्याय संगत नहीं। पता है इस धरती की सबसे महत्वपूर्ण, आवश्यक वस्तु वृक्ष है। वे हमारे पूजनीय हैं। उन्हीं से पर्यावरण का संतुलन बना हुआ है। अत: हर हाल में उनका संरक्षण होना ही चाहिए।'' मालविका दीदी ने कहा।

नमन ने ज्ञान बघारा– ''हाँ दीदी! पेड़ से हमें प्राणवायु मिलती है।'' मानस ने संशोधन किया ''नाम केवल प्राणवायु वरन वे वर्षा को भी सादर न्यौता देते हैं। पेड़ से हमें फल-फूलों की प्राप्ति भी होती है।'' ''हाँ बच्चों पेड़ एक तपस्वी की भाँति अपनी आयुपर्यंत परोपकार में लगे रहते हैं। सच तो यह है कि पेड़ों से हमारा जीवन जुड़ा हुआ है बल्कि यूँ कहना गलत नहीं होगा कि हमारा समूचा जीवन उन पर आश्रित है। पेड़ संरक्षित रहेंगे तो हम सुरक्षित रहेंगे।'' मालविका दीदी ने समझाया।

''दीदी! होलिका दहन में बहुत सारी लकड़ियाँ जल जाती हैं।'' कुश ने कहा। ''हाँ इसका गणित इस प्रकार है एक वृक्ष से दो स्थानों पर जल जाती है होली। एक बड़े पेड़ से औसतन ५ क्विंटल लकड़ी निकलती है और एक होलिका दहन में ढाई क्विंटल लकड़ी उपयोग में आती है।'' मालविका दीदी ने बताया।

''सचमुच दीदी! लकड़ियों की होली जलाना पर्यावरण के साथ खिलवाड़ है, अपराध है।'' दक्ष मुखरित हुआ।

''पर्यावरण के साथ और स्वास्थ्य के साथ भी। पता है एक टन लकड़ी जलाने से हवा में घुलता है ८५ किलो प्रदूषित तत्व.... मालविका दीदी ने कहना चाहा तो भव्या ने टोक दिया– ''प्रदूषित तत्व से तात्पर्य दीदी?''

''प्रदूषित तत्व मतलब कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड आदि।''

मालविका ने अर्थ समझाया। ''दीदी! प्रत्येक वर्ष लाखों नए पेड़-पौधे भी रोपे जाते हैं?'' दक्ष ने प्रश्न किया। उसका मतलब था कि जब लाखों पेड़ हर वर्ष लगाए जाते हैं तो इतने काट भी लिए जाएँ तो फर्क नहीं पड़ना चाहिए। ''हाँ बहुत अच्छा प्रश्न है, लेकिन त्रासदी यह है कि यदि २०० पौधे पनपते हैं तो उनमें से केवल दो ही आगे चलकर पेड़ बन पाते हैं।'' मालविका ने सत्यता से परिचित कराया।

''चलिए दीदी! २०० में से दो बचते हैं यानि एक प्रतिशत भी तो पौधारोपण के समय लाखों पौधे रोपे जाते हैं।'' भव्या ने तर्क देना चाहा।

''अरे कहाँ? एक पौधे को वयस्क पेड़ बनने में २०-२५ वर्ष लगते हैं और यदि होली के बहाने एक बार में ही हजारों पेड़ कटने लग जाएँ तो जंगल कैसे विकसित रहेंगे? और जंगल नहीं बचे तो पर्यावरण?'' मालविका ने प्रश्न उठाया।

कुश ने पूछ लिया- ''फिर आप ही बताइए दीदी! हम लकड़ी की नहीं तो किस वस्तु की होली जलाएँ?''

''बेकार या अपने-आप टूटकर गिरी लकड़ी, पेड़ के सूखे गिरे हुए पत्तों तथा रद्दी वस्तुओं की होली जलाएँ। सबसे अच्छा तो यह होगा कि हम कंडों की होली जलाएँ।'' मालविका ने बताया।

अब चौंकने की बारी विद्यार्थियों की थी। अनेक विद्यार्थियों के मुँह खुले रह गए। ''कंडों की?'' ''हाँ जैसे होली खेलने में रंगों का विकल्प 'प्राकृतिक रंग' बनते जा रहे हैं वैसे ही दहन में लकड़ी का विकल्प 'कंडा' बनता जा रहा है।'' मालविका ने बताया।

''आपका मतलब यह है न कि परंपरागत लकड़ी के बजाए कंडों को जलाया जाए।'' भव्या ने पूछकर आश्वस्त होना चाहा। ''हाँ! बिलकुल सही पकड़ा।'' मालविका ने प्रशंसा के स्वर में कहा।

''होलिका दहन में लकड़ी के स्थान पर कंडे का उपयोग करने से क्या लाभ हो सकते हैं?'' मानस ने जानना चाहा। ''एक नहीं अनेक लाभ हैं।'' मालविका दीदी मुस्कुराई।

''जैसे?'' हनी ने जानना चाहा। ''सबसे बड़ा लाभ यह है कि कंडे की होली से पर्यावरण को दूषित होने व हरियाली बचाने में सहायता मिलती है। देश में लगभग ३० करोड़ गाय-भैंस इत्यादि प्रजाति के पशु उपस्थित हैं। उनके गोबर का उपयोग दैनिक जीवन के साथ-साथ यदि त्योहारों में होने लगे तो उसके निस्तारण की समस्या भी स्वयमेव हल हो जाएगी।'' मालविका दीदी ने बताया।

''हाँ यह बात तो है।'' विराट ने कहा। ''हजारों पेड़ जलने से बचेंगे और भूमि का जलस्तर भी बढ़ेगा।'' मालविका दीदी बोली। ''दीदी! सुना है गोबर के कंडे जलाने से वायुमंडल पवित्र व स्वच्छ होता है।'' प्रेरणा बोली। ''हाँ! वायुमंडल स्वच्छ होता है, कीटाणु समाप्त होते हैं इससे गोमाता को पालने वाले किसान समृद्ध बनेंगे। गोवंश कंडों की खरीदारी से स्वत: ही गोशालाएँ आत्मनिर्भर बन सकेगी।'' मालविका दीदी ने समझाया।

''जी दीदी! कंडों की कमाई से गोशाला का सारा खर्चा निकाला जा सकता है।'' रमण बोला।

''एक बात और, कंडा होली के निर्माण तथा पूजन से घर-परिवार में व्याप्त समस्त प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट होती है तथा सुख-समृद्धि व खुशहाली आती है।'' मालविका दीदी ने बतलाया।

''ठीक है दीदी मैं सब साथियों की ओर से आपको आश्वस्त करता हूँ कि हम होलिका दहन में लकड़ी का उपयोग बिलकुल नहीं करेंगे और दूसरों को भी न करने की सलाह देंगे। क्यों मित्रो! ठीक है न?'' कुश ने अपने सहपाठियों से पूछा।

''हम तैयार हैं।'' सामूहिक स्वर गूंजा। शांति की साँस लेते हुए मालविका दीदी ने आँखें मूँद लीं।

- इन्दौर (म. प्र.)

चुहिया रानी ने होली में
मालपुआ बनवाए।
महक सूँघकर इनकी न्यारी
हाथी राजा आए।
भालू जी संग में अपने
रंग पिचकारी लाए।
सूखा रंग लिए हाथों में
गिरगिट जी मुस्काए,
धमा-चौकड़ी खूब मची तब
सब लौटे हर्षाए।

कविता

होली का रंग

– राजेन्द्र निशेश
चण्डीगढ़ (पंजाब)

दिमागी कसरत

– राजेश गुजर

होली का त्योहार रंगों और पिचकारियों का है, नीचे ७ रंगों के बर्तन और ३ पिचकारियाँ हैं तुम्हें इन पिचकारियों को इस तरह से सजाना है कि हर रंग का बर्तन एक अलग क्षेत्र में विभाजित (बंद) हो जाए। अपने दिमाग को चटपट दौड़ाओ और इन पिचकारियों को सजाओ।

– महेश्वर (म. प्र.)

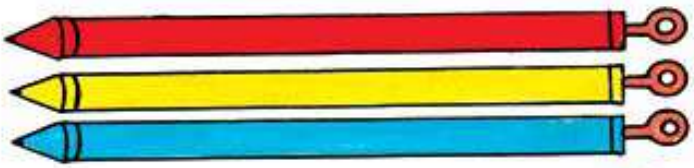

रंग-बिरंगा हुआ श्वेतवन

– विजय जी. खत्री

बहुत समय पहले एक श्वेतवन था। वहाँ सभी चीजें सफेद थीं। पेड़ हो या फूल, पंछी हो या तितलियाँ, सब सफेद।

इस वन की रखवाली एक श्वेतपरी करती थी। वन में रहने वाले सभी को परी के बनाए नियमों का पालन करना पड़ता, जैसे कि एक-दूसरे की सहायता करना, प्रेम-भाव से रहना, लड़ना-झगड़ना नहीं, स्वच्छता रखना, प्रकृति का रक्षण करना।

एक दिन श्वेतपरी को अपनी सहेली से मिलने के लिए उसके देश में जाना हुआ। श्वेतवन की जिम्मेदारी वह पंछियों को सौंपकर चली गई। लेकिन श्वेतपरी के जाने के बाद सभी पंछी वन के नियम भूलकर एक-दूसरे से लड़ने-झगड़ने लगे.... स्वच्छता के बजाय गंदगी फैलाने लगे।

कुछ दिनों बाद जब श्वेतपरी लौटी तो श्वेतवन की दुर्दशा देखकर चौंक गई। उसने क्रोधित होकर सभी पंछियों को श्वेतवन से चले जाने का आदेश दिया। पंछियों ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा- ''हे श्वेतपरी! अब से हम कभी भी श्वेतवन के नियमों का उल्लंघन नहीं करेंगे। हमें क्षमा कर दो।''

लेकिन श्वेतपरी नहीं मानी। पंछियों ने पश्चाताप करते हुए बहुत आग्रह किया तब उसने कहा- ''मैं अपनी शिक्षा वापस तो नहीं ले सकती। किन्तु, यदि तुम कोई उत्तम कार्य करोगे तो मैं तुम सभी को पुन: श्वेतवन में आने की अनुमति दे सकती हूँ।''

पंछियों ने परी का आभार मानत हुए प्रणाम किया और वन से बहुत दूर चले गए। उड़ते-उड़ते वे एक गाँव में आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि इस गाँव के सभी लोग बहुत दुखी थे क्योंकि गाँव में पेड़ों की संख्या कम थी। वर्षा का नामोनिशान नहीं था, न ही कहीं हरियाली थी। खेती के लिए भी पानी नहीं था। लोग कई समस्याओं का सामना कर रहे थे और चिंतित भी थे।

कुछ किसाना खेती के लिए एवं नए पेड़-पौधे लगाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे। श्वेतपंछियों ने उनकी सहायता करने के भाव से मधुर स्वर में चहकना प्रारंभ कर दिया। मीठे स्वर वातावरण में फैलते ही लोग उनकी मधुरता में लीन हो गए और श्वेतपंछियों को निहारने लगे। उनकी चिंता व थकान मानो दूर हो गए। जैसे ही पंछियों के मधुर स्वर रुके, लोगों ने उनसे पूछा- ''तुम सब कोई दिव्य पंछी जान पड़ रहे हो। कहाँ से आए हो?''

पंछियों ने नम्रता से उन्हें सारी वास्तविकता बताई फिर कहा- ''हम सब यहाँ पर आनंद फैलाने और अच्छा काम करने के लिए आए हैं। क्या हम यहाँ रह सकते हैं?''

लोगों ने हर्ष के साथ कहा– ''बिलकुल! आप सब हमारे अतिथि हो। इसलिए निश्चिंत होकर यहाँ पर रह सकते हो।''

यह सुन पंछियों की खुशी का ठिकाना ना रहा। अब वे हरेक के घर–आँगन में उड़ने–फिरने लगे और अपने मधुर स्वरों से सबको खुशी देने लगे। इतना ही नहीं पूरे गाँव में वे पेड़ों के बीज फैलाकर नए पेड़–पौधे उगाने लगे। खेती को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों को खाकर किसानों की सहायता करने लगे।

उनके इस कार्य से पूरे गाँव में हरियाली बढ़ने लगी और वर्षा भी होने लगी। खेती की चिंता दूर होने से सब सुखी होने लगे। पंछियों के बिना अब किसी को अच्छा नहीं लगता था।

कुछ श्वेत तितलियाँ इन सभी पंछियों पर नजर रख रही थी। उन्होंने उनके इस अच्छे कार्य के बारे में श्वेतपरी को बताया तो वह उन्हें श्वेतवन में पुन: लाने के लिए उड़कर गाँव की ओर आई।

किन्तु यह क्या? श्वेतपरी जब गाँव में पहुँची तो वहाँ चारों ओर शोर मचा हुआ था। बच्चे हाथों में लाल, हरा, नीला, पीला.... अनेक रंग लिए यहाँ–वहाँ दौड़ रहे थे। गुलाल, अबीर और रंगबिरंगी फूलों से सब एक–दूसरे के साथ होली खेल रहे थे। श्वेतपरी पहली बार इतने सारे रंगों को देखकर आश्चर्य चकित रह गई।

उसी समय वहाँ पर श्वेतपंछी आ पहुँचे। रंगों का ऐसा अनोखा त्योहार उन्होंने भी कभी नहीं देखा था। बच्चे रंग और पिचकारी लेकर पंछियों से कहने लगे– ''श्वेतपंछी! चलो, हम सब होली खेलते हैं। आज तो हम तुम्हें अलग–अलग रंगों से रंग ही देंगे। तुम सब पंछी बिल्कुल सफेद रंग के जो हो! कौन–सा पंछी कौन है, यह पता ही नहीं चलता।''

फिर अचानक ही बच्चों ने पंछियों को रंगना प्रारंभ कर दिया। तूफानी मनु ने कौए को पूरा काला रंग दिया। यह देख कोयल अपनी हँसी रोक नहीं पाई। तो कौए ने कोयल को भी काले रंग से रंग दिया। यह देख दूसरे पंछी हँसने लगे तो कौआ और कोयल भी हँस पड़े।

फिर बच्चों ने चिड़िया को बादामी, तोते को हरा, बुलबुल को काले–भूरे जैसे रंगों से रंग लिया। मोर भी उत्साहित होकर बच्चों के साथ होली खेलने लगा। बच्चों ने उसे नीले–हरे–बादामी जैसे कई रंग लगा दिए। अपने रंगबिरंगी और आकर्षक पंख देखकर मोर नाचने लग गया। किन्तु बतख और हँस रंगों से बचने के लिए कहीं छुप गए। इसलिए वे सफेद ही रह गए।

पंछियों को खुशियाँ फैलाते हुए देख श्वेतपरी उनके पास आई, जिससे वहाँ पर एक दिव्य प्रकाश छा गया। सभी चकित होकर उसे देखते ही रह गए। पंछियों ने श्वेतपरी को प्रणाम किया तो परी ने कहा– ''प्यारे पंछियो! मैं तुम्हारे इस सुंदर कार्य से बहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें पुन: श्वेतवन में ले जाने के लिए आई हूँ।''

किन्तु पंछी कुछ कहते उससे पहले बच्चे ही बोल पड़े– ''नहीं! श्वेतपरी। अब ये पंछी हमारे साथ रहेंगे। यदि वे चले गए तो हमें हर सुबह मधुर गीत गाकर कौन सुनाएगा? हर जगह बीज फैलाकर हरियाली कौन करेगा? पर्यावरण और किसानों की सहायता कौन करेगा?''

श्वेतपरी बच्चों की बातें सुनकर चुप हो गई। फिर उदास होकर श्वेतवन लौट आई और हर समय पंछियों को याद करने लगी। रात को तारे देखते–देखते वह सो गई।

दूसरे दिन सुबह उठकर उसने देखा तो ये क्या? श्वेतवन में फूल, पेड़–पौधे, तितलियाँ और सारी चीजें ही नहीं बल्कि उसके पंख, वस्त्र, महल भी अब रंगबिरंगी हो चुके थे। पूरा श्वेतवन ही रंगबिरंगा हो गया था। वह सोचने लगी कि आखिर ऐसा हुआ कैसे?

तभी तितलियों ने परी को बताया– ''श्वेतपरी! होली के पर्व पर मोर ने ये रंग श्वेतवन को भेंट किए हैं। ताकि आपकी उदासी और सूनापन दूर हो सके।''

तितलियों की बातें सुनकर श्वेतपरी प्रसन्न हो गई। रंगों को देखकर श्वेतपरी अब भी पंछियों को स्मरण किया करती हैं और सावन में अपनी इन्द्रधनुषी ओढ़नी लहराकर पंछियों को अपनी याद दिलाती रहती है।

– डीसा (गुजरात)

कविता

होली में अजब हो गए ढंग

– डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

कौवा बोला कोयल से,
चल तुझको रंग लगाऊँ।

तुम बन जाना गोरी–गोरी,
मैं लाल–लाल हो जाऊँ।

देख–देख हँसती गौरैया,
मैना फागें गातीं।

नाच–कूद वे रंग लगाती,
बुलबुल ढोल बजाती।

तोता–मोर–पपीहा ने,
पिचकारी खूब चलाई।

कौवा कोयल को रंगने की,
भारी जुगत लगाई।

होली में कौवा–कोयल के,
अजब हो गए ढंग।

सूरदास की काली कामरी,
चढे न दूजो रंग।

– कटनी (म. प्र.)

दादी, मैं यहीं हूँ!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

रोमी होली में अपने गाँव में था। जब वह होली खेल कर घर आया तो उसने देखा कि उसकी दादी कई बच्चों को नहला रही हैं।

मैं भी दादी की मदद करता हूँ...

रोमी चुपचाप पानी डाल कर दादी की मदद करने लगा।

रोमी पानी डालता रहा, दादी बच्चों को नहलाती रहीं...

कई बच्चों के नहा लेने के बाद रोमी ने कहा...

दादी अब मेरे भी रंग छुड़ा दो।

नालायक! अब आया है!! तुझे ढूँढने में न जाने कितने बच्चों का नहला दिया! कहाँ था अभी तक?

दादी, मैं ही तो सब पर पानी डाल रहा था!!

धत् तेरे की!!

एकांकी

बच्चों की चौपाल और होली

– राजा चौरसिया

पात्र–

घनश्याम, बदरी, अमित, चंदू, नंदू तथा बहुत सारे बच्चे।

(अपने गाँव से कुछ दूर बरगद के एक बहुत घने छतनार एवं छायादार वृक्ष के नीचे जड़े चबूतरे पर की चौपाल का दृश्य।)

चंदू– (खड़े होकर और दोनों हाथ जोड़कर) आप सभी लोग पहली बार गाँव में हो रही बच्चों की चौपाल में उपस्थित हुए हैं, इसके लिए सभी को जी से धन्यवाद देता हूँ।

घनश्याम– आज की इस चौपाल के बारे में केवल थोड़ी–सी जानकारी है। मेरी ओर से चिरौरी है कि विषय और उद्देश्य को उजागर किया जाए।

अमित– (सबके बीच खड़े होकर) घनश्याम भैया ने सभी के मन की उत्सुकता को अच्छी तरह जगा दिया, लेकिन मेरी यह विनती है कि जो भी बोलें, खड़े होकर ही बोलें। अनुशासन की डोर न टूटने पाए। यह सुनकर घनश्याम भाई कुछ अखर गया हो तो मैं क्षमा चाहता हूँ।

नंदू– मेरी इच्छा है कि आज के विषय पर बदरी भैया अवश्य बोलें, क्योंकि अपने लोगों के बीच प्रिय बदरी बहुत ही चतुर हैं। यह आईने की तरह साफ बोलता है। दिखावटी तौर पर गुड़ लपेटी और तिल चुपड़ी बातों को बिल्कुल पसंद ही नहीं करता है। झूठ बोलने से डरता है। (तालियाँ बजती हैं।)

बदरी– हाथ जैसे साथ देने वाले प्रिय नंदू ने अपनत्व की हिलौर में ही मेरी इतनी बड़ाई आप सबको अभी सुनाई। यह सच है कि अपने मठे अर्थात छाँछ को कोई पतला नहीं कहता है। मेरी इच्छा है कि आने वाली होली को सब नए ढंग से मनाएँ। पुरानी और नई परिपाटी की जोड़ी रहे। हमें समय के बदलाव के साथ होली के इस त्योहार में भी बदलाव दिखना चाहिए। हमारे दादा लोग कहते रहते हैं कि गुरु अपनाओ जानकर और पानी पियो छानकर।

घनश्याम– इसी तरह का कोई और भी उदाहरण सुना दो, सोने में सुगंध जैसा; तो आगे की तुम्हारी हर बात दही की तरह जम जाएगी। (प्राय: सभी बच्चे हाँ–हाँ के स्वर आपस में मिलाते हैं।)

बदरी– अहा! मुझे एक बहुत ही बढ़िया, ठीक तथा बड़ा नीक सा दोहा याद आ गया।

''साधो ऐसा चाहिए जैसा सूप स्वभाव।
सार–सार गहि रहे थोथा देय उड़ाय।''

हमें होली को बहुत सोच–समझकर मनाना है। इस पावन पर्व को अपावन नहीं बनाना है। पढ़े–लिखे होने के नाते हमें फालतू ढोंग के पिछ–लगुआ न होकर सही रीति–नीति में कुछ अगुआ होना चाहिए।

चंदू– तुम्हारी मंशा बहुत प्रशंसा करने योग्य है। हमें ऐसे धार्मिक त्योहार को अधार्मिक ढंग से न मनाकर मर्यादा को ध्यान में रखकर मनाना चाहिए।

अपना मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का देश है। मुझे होली में कुछ शब्द सुनते ही बड़ा कष्ट होता है।

अमित– अरे! ऐसा वह कौन–सा खराब शब्द है?

चंदू– 'बुरा न मानो होली है' की मस्ती में हुड़दंग लीला कहकर लोग बहुत प्रसन्न होते हैं। क्या हुड़दंग को लीला कहना चाहिए? लीला तो भगवान राम और कृष्ण ने की है।

घनश्याम– गाँवों में आज भी यह कहावत सुनी जाती है– 'लीक–लीक गाड़ी चले, लीके चले कुपूत।'

नंदू– इसका मतलब?

घनश्याम– मतलब यह कि बैलगाड़ी बनी–बनाई लीक पर ही चलती है। इसी तरह कुपूत अंधविश्वास पर ही चलते हैं, जबकि सुपूत बुद्धि तथा आत्मविश्वास के अनुसार ही निर्णय करते हैं। विवेक को ही ध्यान में धरते हैं।

अमित– मुझे विद्यालय में शनिवार को हुई बाल सभा में बड़े मास्टर जी के ये शब्द याद आते रहते हैं। 'मरी हुई मछली पानी के बहाव के साथ बह जाती है, लेकिन जीवित मछली धारा के विपरीत दिशा में जाती है। शक्ति के साथ संघर्ष करती नजर आती है।'

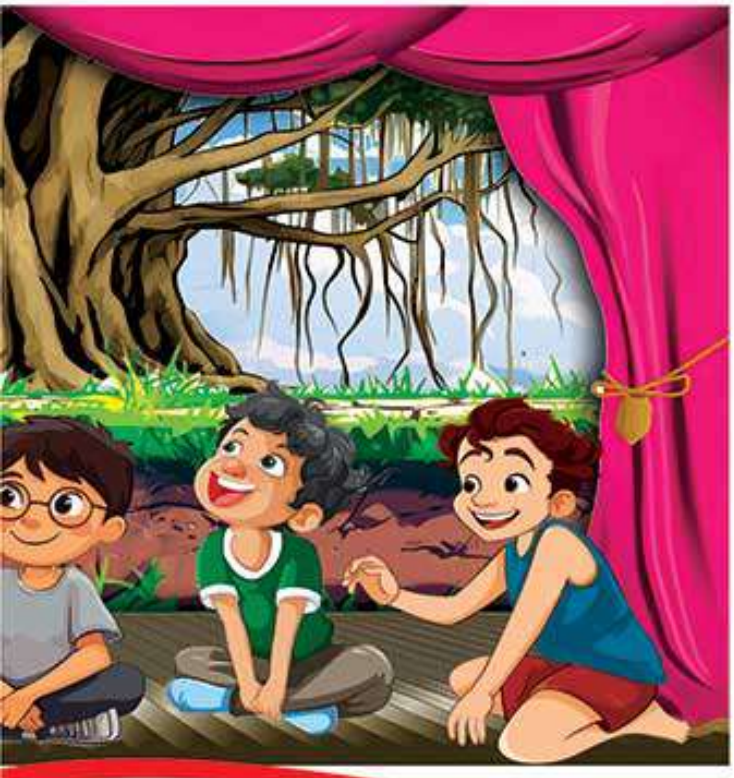

चंदू– वाह! जो सच में उत्साही रहता है मन, उसी में रहता है। नयापन टनाटन। एक बात मुझे भी याद आ गई। एक दिन मेरी अम्मा की अम्मा अर्थात् मेरी नानी हँसकर यह बोली थी– 'वही है सही काम, जिसके परिणाम को किया जाए प्रणाम!' बढ़िया हँसोड़ वही है जो हँसी की हँसी नहीं उड़ने देता है।'

बदरी– होली क्यों मनाई जाती है? इस बात को भुलाकर उत्पात मचाना, छेड़खानी करना और चेहरों के साथ कपड़ों की भी जबरन रँगाई–पुताई एक बुराई ही है। पवित्र त्योहार को गंदे ढंग से मनाना क्या पाप कमाना नहीं है? धुरेड़ी से शुरू रंगपंचमी तक ऊँट–पटाँग गँवारपन से हमें बहुत ही दूर रहना है। इतनी बड़ी महँगाई के चलते रंग–गुलाल पर पैसे यानी लक्ष्मी को फूँकना कहाँ तक ठीक है? नशे में टुन्न हुए हुरियारों की टोली को देखकर भी नहीं देखना चाहिए।

अमित– मुझे तो कानफोड़ ढोल–ढमाके जरा भी नहीं सुहाते हैं। डर के मारे लोग अपने घरों को पिंजरे मानकर तोते की तरह कैद रहते हैं। उत्साह और उल्लास के त्योहार में ढेर सारी मुसीबतें सहते हैं। कई जगह कीचड़ और धूल से होली मनाते हैं। ऊँचे त्योहार को नीचे ले जाते हैं।

नंदू– कई जगह लड़ाई–झगड़े तक हो जाते हैं। सभी दुकानें बंद सभी वाहनों के चक्के जाम होने से भी कितना बुरा सन्नाटा पसरा रहता है। उपद्रव और मनचाही गुहार क्या यही है भक्त प्रह्लाद के देश का होली त्योहार?

एक बालक– यदि हम अभी न बदलेंगे तो भला कब बदलेंगे। त्योहार के अर्थ को व्यर्थ करना अब हम लोग सहन नहीं करेंगे। आनंद की अभिव्यक्ति के मामले में अच्छी स्वस्थ हँसी–ठिठोली करते हुए प्राकृतिक गुलाल, रंग लगाकर गले से लगाकर

शुभकामनाएँ देना ही उचित है। माथे पर तिलक लगाकर बड़ों के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करना पूजा का प्रसाद प्राप्त करना है। किसी को तंग करना पर्व का अपमान है।

अमित– वाह! बुद्धि की शुद्धि के बिना यह पर्व मात्र तमाशा है। पानी में बताशा है। यदि समझते हुए भी हम त्योहार का सही सुख प्राप्त न करें तो हम 'नदी किनारे घोंघा प्यासा का हँसी–उड़ाऊ नमूना है। पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना है। होली के गीत गाते हुए ठुमक–ठुमक कर नाचेंगे।

चंदू– मुझे भरपूर भरोसा है कि आप सब लोग मेरी कुछ सुनी बातों को सुनकर जमकर तालियाँ बजाएँगे।

बदरी– लो! मैं पहले से ही ताली बजा रहा हूँ। सत्य की शक्ति और भक्ति के उदाहरण प्रह्लाद की याद में हमें अधिक से अधिक खुशहाल बने रहना है। चंदू अब शुरू हो जाओ।

चंदू– मैं अपने हँसमुख दादाजी से सुने ये दोहे सुना रहा हूँ–

डॉक्टर, बैद बता गए कुदरत का कानून।
जितना हँसता आदमी उतना बढ़ता खून।।
(कुछ रुककर हँसते–मुस्कुराते हुए)
भोजन आधा पेट कर दुगुना पानी पीव।
तिगुना श्रम चौगुन हँसी, वर्ष सवा सौ जीव।।
(सभी बालक दोहराते हुए तालियाँ बजाते हैं।)

घनश्याम– इस बार हम सब नए रंग–ढंग, उमंग और हँसी की तरंग के संग अनूठी होली मनाएँगे और गाँव को बताएँगे यह कि सभी प्राणियों को रोना आता है, लेकिन हँसना केवल मनुष्य को आता है, इसलिए जो कभी नहीं हँस पाता है, अब आगे मैं और कुछ भी नहीं कहना चाहता हूँ। (सभी खूब हँसते हैं।)

अमित– इस बार हम एक–दूजे को रसगुल्ले से हजार गुने बढ़कर हँसगुल्ले खिलाएँगे, खूब खिल खिलाएँगे।

दूसरा बालक– हम भले ही हँसी के मारे लोट–पोट हो जाएँगे।

समवेत स्वर– अभी से नई होली की बधाई और धन्यवाद।

– उमरियापान, कटनी (म. प्र.)

कविता

नव संवत् नव वर्ष

– सुधाकर मिश्र 'सरस'

नूतन वर्ष के अभिनंदन में,
कुछ नूतनता का सृजन करें।
छोड़ पुरातन बातों को हम,
कुछ नवीनता का मनन करें।।

क्यों न तजें उन चर्चाओं को,
जो समरसता का हनन करें।
क्यों न सहेजें उन रिश्तों को,
जो संबंधों का जतन करें।।

प्रतिकार करें उन बातों का,
जो मानवता का पतन करें।
शक्ति दें उन भुजदंडों को,
जो दानवता का दलन करें।।

विष घोलते हैं समाज में जो,
उन सब दुष्टों का दमन करें।
मान करें एक–दूजे का,
आपस में आवागमन करें।।

सारी कटुता, सारे विवाद,
कुल बुराइयों का हवन करें।
स्वागत है नववर्ष तुम्हारा,
जनमानस तुमको नमन करें।।

नए प्रतिमान गढ़ें हम सब,
मिलजुलकर देश को चमन करें।

– महू, इन्दौर (म. प्र.)

स्नान से शुद्धि

– डॉ. मनोहर भण्डारी

प्रतिदिन गंगास्नान करें– थ्रोम्बोसिस रिसर्च इंस्टीट्यूट, इंग्लैण्ड के अनुसार ठंडे पानी से स्नान करने से इम्युनिटी सशक्त होती है, रक्त संचार अच्छा रहता है। अवसाद तथा थकान का नाश होता है। शारीरिक शक्ति बढ़ती है। यही बातें अष्टांगहृदय नामक आयुर्वेद के ग्रंथ में भी कही गई हैं। स्नान के जल में गंगाजी, नर्मदाजी जैसी पवित्र नदियों का आव्हान करें। स्नान करते समय जल के स्पर्श को सजगता से अनुभव करें और दृढ़ता तथा पूर्ण विश्वास के साथ सोचें कि यह पवित्र जल मेरे मनोशारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक विकारों का हरण कर रहा है। पैरों को अनिवार्य रूप से रगड़ें। कच्छा पहनकर ही स्नान करें। रोंयेदार तौलिये का उपयोग सोच बौद्धिक विकारों का हरण कर रहा है। पैरों को अनिवार्य रूप से रगड़ें। कच्छा पहनकर ही स्नान करें। रोंयेदार तौलिये का उपयोग सोच–समझकर करें। टॉवेल को धूप में सुखाएँ, अन्यथा गीले टॉवेल से मुँहासे हो सकते हैं। गीले रोंयेदार टॉवेल में फंगस के अंडें पनप सकते हैं। त्वचा भी साँस लेती है, अतएव हमेशा ढीले वस्त्र ही पहनें। हृदय, फेफड़ों, माँसपेशियों को अपना काम करने के लिए फैलने–सिकुड़ने के लिए ढीले वस्त्रों की आवश्यकता होती है। अपनी पुस्तक **फैशन एण्ड फेस्टिशिज्म** में डॉ. डेविड कुंजले ने तंग कपड़ों के हानिकारण प्रभावों का उल्लेख किया है। **टाइट पेंट सिण्ड्रोम** बीमारी तंग कपड़ों की देन है।

सूर्य किरणों की एंटीबायोटिक का सेवन करें– सुबह ८ बजे के पूर्व सूर्यदर्शन करें। न्यूयार्क के **डॉ. डेलियन डाउनिंग** के अनुसार प्रातःकालीन सूर्य किरणें प्राकृतिक एंटीबायोटिक की तरह मनुष्य की रोग प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्युनिटी) में पर्याप्त गुणात्मक (क्वालिटेटिव) सुधार करती हैं। यूरोप में दूसरे विश्व युद्ध के पहले अर्थात् पेनिसिलिन के आविष्कार के पूर्व **सनशाइन थेरेपी** का प्रचलन था। इसमें एंडोर्फिन रसायन निकलता है, जो मूड को अच्छा करता है, तनाव को कम करता है। टेस्टोस्टेरोन नामक हारमोन की मात्रा बढ़ती है। सूर्य किरणों को पीठ से ग्रहण करें।

– इन्दौर (म. प्र.)

दादाजी

– डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

रखा हुआ है चश्मा केवल,
रखी हुई है सिर्फ छड़ी।
रखी हुई है टोपी उनकी,
रखी हुई है हाथ घड़ी।
पर बिस्तर खाली–खाली है,
नहीं दिख रहे दादाजी।
खूब हँसाने–गाने वाले,
कहाँ गए हैं दादाजी?

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

(श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना को बाल काव्यात्मक श्रद्धांजलि)

होली के संदेश झमाझम गूंज रहे

– सावित्री जगदीश चौरसिया

आर्यावर्त के प्रसिद्ध तीन त्योहार अपनी पावनता, समृद्धिता और समानता के महान तत्व से आते हैं। रक्षाबंधन नारी की रक्षा का पावन पर्व, हर नारी जो किसी न किसी भाई की बहन होती है, उस भाई से बहन की रक्षा कराती नारी प्रतिष्ठा का ज्ञान कराती। वहीं दीपपर्व अपनी श्रमशक्ति से परिवार, समाज देश को समृद्ध बनाता एवं अंधकार अर्थात अज्ञान से जूझने का साहस प्रदान कर आलोक प्रदान करता है। वहीं होली के रंग में रंग यह भाव की अभिव्यंजना है कि संसार में सभी मानव एक समान है, यह समानता का तत्व संसार को भातृत्व के बंधन में बाँध, मिलकर रहने के पथ की ओर अग्रसर कर सत्यता का ज्ञान कराती है परंतु मनुष्य ने जब अपने आसपास अहमी, धनी और श्रेष्ठ होने का भ्रम पाला तब से ये त्योहार भी वर्ग भेद में मिल गए, राखी ब्राह्मण पर्व दीपावली वैश्य पर्व और होली शूद्र पर्व कहा जाने लगा। पर आज पुन: वर्ण प्रधानता के भाव का वसन जीर्णशीर्ण हो सभी त्योहार मिलजुल कर मनाने लगे हैं जो अत्यन्त सुन्दरतम भावना का प्रतीक है।

इन सब त्योहारों में होली वास्तव में सर्वश्रेष्ठ त्योहार है, क्योंकि होली एक राजा के अहम का अंत और सत्य की विजय है तथा उसके रंगों में भावात्मक भाव है कि रंग में, रंग जाने पर सभी समान है, जब आपस में मैत्रीपूर्ण व्यवहार होगा, तभी सुखी समाज भी होगा। आज वर्ण भेद अवश्य कम है पर अनेक ऐसी बुराइयों का जन्म हो गया है जिनने होली जैसे महापर्व को बेरंग कर दिया है।

पौराणिक प्रसिद्ध आख्यान में हिरण्यकश्यपु दैत्य ने अपनी बहन होलिका जिसे अग्नि में नहीं जलने का वरदान था, उसने अपने सत्यवादी ईश्वर भक्त पुत्र को बहन की गोद में बैठाकर जलाने का प्रयत्न किया था जिसमें वरदान प्राप्त अज्वलनशील बहन जल गई भक्त प्रह्लाद धधकती अग्नि ज्वाला के बीच से ऐसे निकले मानो शीतलकुंड से बाहर आ रहें हो। इस प्रकार सारगर्भित इस त्योहार का भाव, सत्यता की अमरता का भान करा असत्यता के नाश की ओर इंगित करता है। शाश्वत सत्य है, असत्य कितना भी वरदानी हो, नाश को प्राप्त होगा ही।

इस प्रकार संसार को सुसंस्कृत गुण प्रदान करने वाला यह गुणवान, शुभकारी संस्कारित त्योहार आज कुसंस्कारित रूप में लिया जा रहा है, जो भारतीयों के लिए लज्जाजनक है इस त्योहार में मदिरापान कर नवयुवक से लेकर बूढ़े तक अपनी मर्यादाओं को विस्मृत कर वह अश्लीलता पूर्ण

व्यवहार करते हैं जो वर्जित है। भौंडे नृत्य, द्विअर्थी गाने इस पर्व की अपविशेषता बनते जा रहे हैं। होलिका के रूप में होली में रखी जाने वाली प्रतिमाएँ नारियों को लज्जित करने वाली होती है।

अत: इन सब कुसंस्कारों की छूट माताएँ अपनी संतानों को न दें, वे त्योहार का अर्थ समझाते हुए अनर्थ से बचाएँ, निश्चित ही माताएँ अपने बच्चों को सीख देंगी तो सुधार आएगा साथ ही महिलाएँ रंग खेलते समय सावधानी बरतें।

रंग खेलते समय संयमित रहे। अच्छे रंगों का उपयोग करें, आज के मिलावटी रंग, आँखें त्वचा के लिए शाप सिद्ध हो सकते हैं। कीचड़, ग्रीस, आदि से बचना चाहिए। मादक द्रव्यों का उपयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। वरन् इस त्योहार की महिमा के अनुसार मन के मैल को दूर कर सब सप्रेम से मिलें तथा संसार को भ्रातृत्व की भावनाओं से ओतप्रोत करें।

चैत्र माह से नए संवत्सर का प्रवेश होता है अर्थात् चैत्र से ही हिन्दुओं का नववर्ष प्रारंभ होता है। इस त्योहार में भी जो नवखाद्यान्न अर्थात् नवीन अन्न की उत्पत्ति होती है उसे हर्षोल्लास से ईश्वर को अर्पण कर नया दिन मनाते हैं।

इसलिए होलिका दहन को नवसस्येष्टि हवन भी कहा जाता है।

मन के मैल को हटाते सब समानता का रंग लगाते होली का त्योहार मनाते हैं और मनाया जाना चाहिए। सच्चे अर्थों में निर्मलता लगा तब के रंग से जब आत्मा का रंग खिलेगा तो होली का रंग आह्लादित करेगा। होली प्रेम समानता का संदेश है। आओ रंगों के माध्यम से इस संदेश को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाकर सूर्य का देश होने का गौरव प्राप्त करें और पर्व की महानता से संसार को सुखमय बनाएँ।

– मण्डला (म. प्र.)

अथक लेखन के पर्याय : शंकर सुल्तानपुरी

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

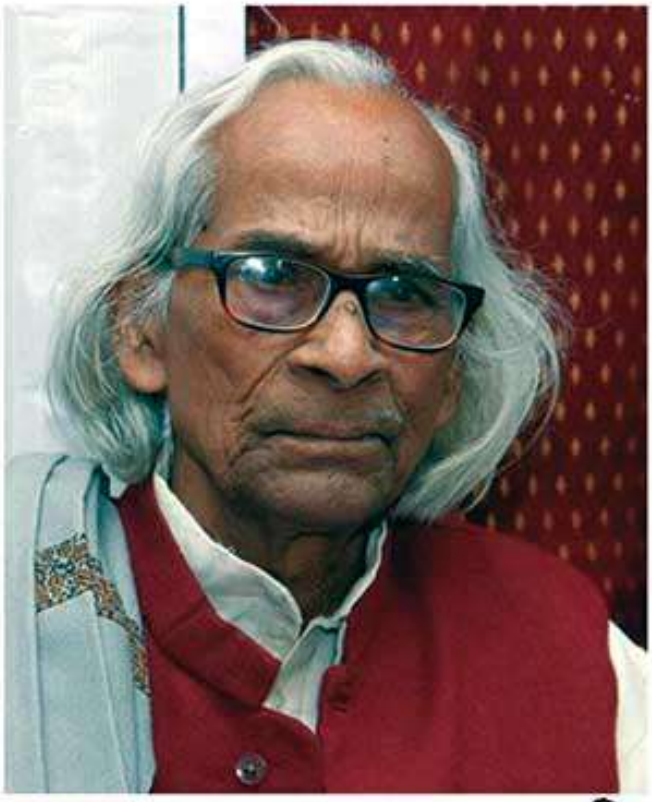

शंकर सुल्तानपुरी

अपने समय के सर्वाधिक सक्रिय रचनाकार रहे शंकर सुल्तानपुरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। आजीवन स्वतंत्र लेखन करते हुए उन्होंने बड़ों और बच्चों के लिए विपुल साहित्य रचा। ढेर सारी विधाओं में लिखा यश, पद, पुरस्कार : सबसे दूर रहते हुए लिखा वे मसिजीवी थे। उनकी ५०० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, संस्मरण, चित्रकथा विधाओं में लिखी उनकी रचनाओं में बाल जीवन के विविध रंगों की मनोरम छटाएँ देखते ही बनती हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन से भी उनकी ढेरों कहानियाँ और नाटक प्रसारित हुए।

सुल्तानपुर के परऊपुर ग्राम में १ दिसम्बर १९४० को गुरुप्रसाद श्रीवास्तव और रामादेवी की संतान के रूप में जन्में शंकर सुल्तानपुरी का मूलनाम शंकरदयाल श्रीवास्तव था। १२ वर्ष कीअवस्था में ही उनकी पहली रचना बाल पत्रिका 'बाल सखा' में प्रकाशित हो गई थी। १९५२ में प्रकाशित उनकी इस कविता की पंक्तियाँ थीं–

'गरमी आई, गरमी आई,
चैन न पानी से मिलता है,
आओ खाएं बर्फ–मलाई।'

उनकी पहली पुस्तक 'हमें रोटी चाहिए' वर्ष १९५५ में प्रकाशित हुई।

शंकर सुल्तानपुरी जी बच्चों के मनोरंजन के साथ–साथ उनके जीवन में मूल्यों के हस्तांतरण के भी पक्षधर थे सुल्तानपुरी जी की प्रमुख पुस्तकें हैं– 'क्रांतिकारियों की कहानियाँ', 'भारत के अमर बच्चे', 'नटखट बच्चों की पार्टी', 'मोती चमके धूल में', 'महापुरुषों के गीत', 'बाल गीत', 'शिशु–गीत', 'हम भारत के वीर सिपाही', 'कथा जवाहरलाल की', 'मुक्तिदूत स्वामी दयानन्द', 'अजेय पौरुष', 'बनो भरत सम भाई', 'बाल रामायण', 'बाल गीता', 'कृष्ण लीला', 'रानी–लक्ष्मीबाई', 'स्वामी रामतीर्थ', 'भारतमाता की आत्मकथा', 'मुंशी तोताराम', 'चंगू–मंगू मामा खैराती लाल', 'किस्सा पोपटलाल का', 'पत्थर का पुतला', 'मिस्टर चम्पत', 'पिलपिली साहब', 'पप्पू की अन्तरिक्ष यात्रा', 'आकाशवाणी के चमत्कार', 'आविष्कारों की कहानियाँ', 'विज्ञान की विभूतियाँ' 'मंगल लोक पर एक दिन', 'एक थे उधार चंद', 'भीख नहीं माँगूंगा', 'बहादुर बेटी', 'नाग कन्या', 'आदर्श नारियाँ', 'प्राचीन आदर्श कथाएँ', 'कहानियों का खजाना', 'खिलौने वाली', 'बच्चे

मन के सच्चे', 'नटखट चीकू' 'मम्मी-पापा सावधान', 'अड़म् गड़म् तड़म्', 'बच्चे बने महान', 'फूल खिले काँटों में', 'बेटे हों तो ऐसे', 'बेटियाँ हों तो ऐसी', 'क्रांति की चिनगारियाँ', 'मोहन से महात्मा', 'हमारा मसीहा', 'रामबोला', 'कुटिया से राजभवन तक', 'अनमोल कथाएँ' आदि।

बच्चों के लिए उनकी साठ चित्रकथाएँ हिंदी के अतिरिक्त अँग्रेजी भाषा में भी अनूदित हुईं। उन्होंने किशोरों के लिए गीता का अनुवाद किया था जिसकी सराहना सुमित्रानंदन पन्त और महादेवी जी ने भी की थी।

उनके द्वारा संपादित पाठ्य पुस्तक 'अनुपम भारती' शिक्षाविदों के विशेषकर देखने योग्य है। सुल्तानपुरी जी उत्तर प्रदेश सरकार की पत्रिका 'बाल वाणी' के अतिथि संपादक भी रहे।

अनेक संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया। वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें पाकर सम्मान गौरवान्वित होता था। श्रेष्ठ बाल साहित्य लेखन हेतु उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर द्वारा आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया था।

पहला 'देवपुत्र गौरव सम्मान' शंकर सुल्तानपुरी को ही प्रदान किया गया था। उ. प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा उन्हें 'सूर सम्मान' से पुरस्कृत किया गया।

१८ फरवरी २०१९ को लखनऊ में उनका निधन हो गया अभी भी उनका विपुल साहित्य अप्रकाशित है, जिसके प्रकाशन की दिशा में कार्य होना चाहिए।

बचपन में ही उन्होंने बाल रंगमंच से जुड़ी संस्था भी बना ली थी। उन्होंने प्रचलित कथाओं के आधार पर अनेक श्रेष्ठ नाटक रचे आइए, उनकी एक नाट्य रचना और कुछ प्रेरक रचनाओं का रसास्वादन करते हैं-

बाल नाटक

दादी अम्मा

(प्रथम दृश्य)

(बूढ़ी अम्मा फर्श पर बैठी चर्खा कात रही है। अमित पास ही उछलते-थिरकते हुए बड़े उल्लास से गा रहा है।)

अमित- मेरी अच्छी दादी अम्मा! मेरी प्यारी दादी अम्मा। सन के जैसे उजले बाल, बिना दाँत के पिचके गाल। घुर-घुर चर्खा कात रही है, मेरी भोली दादी अम्मा...।

दादी अम्मा- (पोपले मुँह से बेतहाशा हँसती हुई गद्‌गद स्वर में) खूब अच्छी कविता सुनाई बेटे! सुनो, मैं भी तुम्हें एक कविता सुनाती हूँ- तुम मेरी आँखों के तारे, मेरे प्यारे पोते, मेरे साथ खेलते, हँसते, कभी नहीं तुम रोते...।

अमित- (दादी अम्मा को बाँहों में भरकर उल्लास से) तुम्हारी कविता तो मेरे से भी अच्छी है दादी अम्मा।

पिता- (अमित को दूर से पुकारते हुए) अमित... ओ अमित...! चलो नाश्ता कर लो। चलो जल्दी...।

अमित- (खिन्नता से) पिताजी ने नाश्ते की टेर लगाकर सारा आनन्द समाप्त कर दिया।

दादी अम्मा- (प्यार से) जाओ बेटा! नाश्ते का समय हो गया है। जाओ।

अमित- आप भी चलिए दादी अम्मा...।

दादी अम्मा- (असफल हँसी के बीच) मैं...? (गहरी साँस)

माँ- (अमित को खीज भरे स्वर में पुकारी हुई।) सुनते क्यों नहीं अमित? चाय ठण्डी हो रही है।

दादी अम्मा- (मनुहार से) जाओ बेटा! जाओ। तुम तो जानते हो, मैं पूजा पाठ के बाद नाश्ता लेती हूँ।

अमित– कल से तुम सुबह ही पूजा कर लिया करो दादी अम्मा! हम लोग साथ में ही नाश्ता लिया करेंगे।

पिताजी– (कठोर स्वर में) अमित... अमित...।

दादी– (आतुरता से) पिताजी नाराज हो रहे हैं बेटे। (खाँसी आ जाती है।)

(अमित चला जाता है।)

परदा गिरता है।

(द्वितीय दृश्य)

(अमित के माँ–पिताजी खाने की मेज पर बैठे हैं।)

माँ– (अमित के आते ही, रोष में) हम कब से पुकार रहे हैं।

पिताजी– (कड़े स्वर में) अब तुम बहुत ढीठ हो गए हो! क्या कर रहे थे?

अमित– (ठिठक कर सहमे स्वर में) दादी अम्मा के पास था पिताजी...।

माँ– (रोष से) सुना आपने...?

(नेपथ्य से दादी अम्मा की ठांय ठुक्क खाँसी और हाँफने की आवाज रह–रहकर आती है।)

पिताजी– (घुड़ककर) वहाँ क्या कर रहे थे तुम?

अमित– ऐसे ही दादी अम्मा के साथ खेल रहा था।

माँ– दिमाग खराब है तुम्हारा? दादी अम्मा को दमा की बीमारी है। तुम्हें भी खाँसी हो जाएगी तब...।

अमित– दादी अम्मा को बहुत खाँसी आती है। क्यों आती है माँ?

माँ– (खिजलाए स्वर में) बुढ़ापे में खाँसी आती ही है।

अमित– सबको नहीं आती माँ...। देखिए न! बबलू के दादाजी हमारी दादी अम्मा से अधिक बूढ़े हैं। हमने उन्हें कभी खाँसते हुए नहीं सुना।

पिताजी– (झुंझलाकर) तुम्हें बातें करना खूब आ गया है।

माँ– (ताने के भाव से) जैसी संगत वैसी बुद्धि.. (उपहास भरी हँसी के साथ) इसे साफ सुथरे पड़ोसी बच्चे नहीं भाते। दादी अम्मा ने इस पर जादू की छड़ी घुमा दी है।

पिताजी– (चेतावनी के भाव से) देखो अमित बेटे! दादी अम्मा बूढ़ी हैं, बेकार हैं। तुम बच्चे हो। तुम्हें पढ़–लिखकर बड़ा आदमी बनना है। इसलिए तुम्हें उनके साथ खेलकर अपना समय नहीं बरबाद करना चाहिए।

अमित– दादी अम्मा मुझे बहुत–बहुत प्यार करती हैं पिताजी। वे बेकार नहीं है... चर्खा कातती हैं और मुझे खूब अच्छी–अच्छी कविताएँ सुनाती हैं।

माँ– (खीझकर) अरे बुद्धू! तुझे कब बुद्धि

आएगी ? यदि तुझे उनकी बीमारी लग गई तो हम क्या करेंगे ?

अमित– आप दादी अम्मा का उपचार क्यों नहीं करवातीं ? वे अच्छी हो जाएँगी तो मुझे बीमारी नहीं लगेगी।

पिताजी– (बिगड़कर) बेकार की बकवास मत करो।

अमित– (रोनी आवाज में आप नाराज क्यों होते हैं पिताजी ? मैं बीमार पड़ता हूँ तो आप मेरे लिए दवा लाते हैं न ! फिर दादी अम्मा....।

माँ– (बुरी तरह खीझकर) तुम्हारे ऊल-जलूल प्रश्नों का उत्तर देने का समय मेरे पास नहीं है। पिताजी को कार्यालय जाना है और मुझे कॉलेज। तुम्हारा विद्यालय खुल जाएगा तभी तुम ठीक होंगे।

अमित–(बिलखते हुए) पिताजी भी मुझ पर बिगड़ते हैं और आप भी नाराज होती हैं। बस दादी अम्मा ही प्यार से बोलती हैं।

पिताजी– (अमित के सिर पर हाथ फेरते हुए लाड़ भरे स्वर में) नहीं बेटे ! हम तुम्हें बहुत-बहुत प्यार करते हैं। परसों तुम्हारा जन्मदिन है। बोलो, क्या उपहार लोगे ? (हँसते हुए) इस बार तुम्हें मुँहमाँगी चीज दूँगा।

(दादी अम्मा की खाँसी की तेज आवाज आती है।)

अमित– (बड़ी ललक से) तो इस बार आप दादी अम्मा के लिए कोट बनवा दीजिए। देखिए न, सर्दी लगने से उन्हें खाँसी....

माँ– (बिगड़कर जाती हुई) जन्मदिन तुम्हारा न कि दादी अम्मा का। (पति से दीवार घड़ी की ओर देखती हुई) छोड़िए जी इसे। आइए चलिए, घड़ी दस बजा रही है। (पति-पत्नी चले जाते हैं।)

(तृतीय दृश्य)

(अमित कमरे में बैठा कुछ लिख रहा है। थोड़ी देर बाद पुकार लगाता है।)

अमित– आइए दादी अम्मा ; मेरे कमरे में। मैंने गृहकार्य पूरा कर लिया है।

दादी अम्मा– अभी थोड़ी देर में आऊँगी बेटे !

अमित– नहीं दादी अम्मा, तुरन्त आइए। मुझे अकेले डर लग रहा है।

(दादी अम्मा लठिया ठुकठुकाती हुई अमित के कमरे में द्वार पर आ खड़ी होती हैं, पोपले मुँह से हँसती हुई कहती है।)

दादी अम्मा– तुमने तो अपना गृहकार्य पूरा कर लिया। मुझे भी तो अपना गृहकार्य पूरा कर लेने दो।

अमित– (विस्मय से) चर्खा कातना तुम्हारा गृहकार्य है दादी अम्मा ?

दादी अम्मा– हाँ बेटा ! बेकार बैठना अच्छी बात नहीं होती।

अमित– लेकिन माँ तो कहती है कि तुम बूढ़ी

हो, बेकार हो।

दादी अम्मा– (निश्छल हँसी हँसकर) मैं उधर कोठरी में रहती हूँ। तुम्हारी माँ को क्या पता कि मैं चर्खा कातती हूँ।

अमित– (उत्सुकता से) चर्खा कातने से क्या होता है दादी अम्मा?

दादी अम्मा– सूत निकलता है बेटे.... और सूत से कपड़े बनते हैं।

अमित– (विचार मग्न होकर) तो अपने लिए एक अच्छी–सी धोती क्यों नहीं बुन लेतीं? देखो न तुम्हारी धोती.... (गहरी साँस छोड़ता है।)

दादी अम्मा– (हाँफते स्वर में) अरे बेटे! अब इतनी ताकत नहीं रह गयी है कि धोती भर का सूत कात पाऊँ...। जब तुम्हारी माँ घर पर होती हैं, चर्खे की घर्र–घर्र होने से नाराज होती हैं। (करुण हँसी के बीच) मेरी धोती बहुत फटी गंदी है? अच्छा कल अवश्य धोऊँगी। मेरे हाथों में दर्द रहता है न इसलिए (गहरी निःश्वास)।

अमित– (दादी अम्मा का हाथ पकड़कर) अरे! दरवाजे पर क्यों खड़ी हो दादी अम्मा। अंदर आ जाओ न। यहाँ बिस्तर पर बैठो।

दादी अम्मा– (सकुचाती हुई) बेटे, मेरे कपड़े गंदे...

अमित– (दादी अम्मा को बिस्तर पर खींचते हुए) मेरे पास बैठो दादी अम्मा। मुझे एक बात बताओ, मैं अपनी माँ का बेटा हूँ वैसे ही पिताजी आपके।

दादी अम्मा– हाँ वैसे ही तुम्हारे पिताजी मेरे बेटे हैं। (गहराए स्वर में) तुम्हारे पिताजी अबोध थे तो उनके पिताजी यानी तुम्हारे दादाजी नहीं रहे। (एक गहरी श्वास) कोई आमदनी न थी। मैं कम पढ़ी थी, इसीलिए नौकरी नहीं मिली। तब मैंने दूसरों के यहाँ काम करके तुम्हारे पिताजी का पालन–पोषण किया। उन्हें पढ़ाया–लिखाया (स्वर गहराता जाता है) इतनी कठिनाइयों में कभी हिम्मत नहीं हारी। उसी का परिणाम है कि आज तुम्हारे पिताजी (गद्‌गद स्वर में) यानी मेरा बेटा इतना बड़ा अधिकारी है।

अमित– (भारी हुँकार में) मेरी अच्छी दादी अम्मा, आपने पिताजी के लिए कितना किया। किन्तु पिताजी आपके लिए दवा क्यों नहीं लाते? धोती क्यों नहीं लाते?

दादी अम्मा– (खेद का स्वर निकालती हुई) पिताजी को बुरा नहीं कहते बेटा (विफल हँसी) देखो वह मेरा बेटा है तुम उसे बुरा कहोगे तो मैं नाराज हो जाऊँगी हाँ। (हँसती हैं)।

(सहसा स्कूटर की भरभराहट सुनाई पड़ती है।)

दादी अम्मा– (झपटकर जाती हुई) लो, तुम्हारे माँ–पिताजी आ गए। मैं चली।

अमित– (जाती हुई दादी अम्मा को सम्बोधित कर ऊँचे स्वर में) दादी अम्मा, परसों मेरा जन्मदिन है (फिर स्वयं से बुदबुदाता है) दादी अम्मा माँ–पिताजी से इतना डरती क्यों है? (गहरी श्वास छोड़ता है।)

(चतुर्थ दृश्य)

(अमित का जन्मदिन मनाया जा रहा है। मेहमान और मित्र उसे घेर कर खड़े हैं। सब लोग गा रहे हैं। हैपी बर्थ डे टू यू... अमित अनमना उदास–सा है। गाना समाप्त होने पर सब खिलखिला कर हँसते हुए तालियाँ बजाते हैं।)

माँ– (मेहमानों से) अब आप लोग भोजन कक्ष में चलिए। (सब लोगों के चले जाने पर माँ अमित से) क्या बात है बेटे? अपने जन्मदिन पर तुम उदास क्यों हो?

अमित– (अनमने स्वर में) माँ! इतने सारे लोग तो आए हैं किन्तु दादी अम्मा।

माँ– (अरुचि और उपेक्षा से) यहाँ आकर ठायं ठायं खाँसने लगेगी तो सारा कार्यक्रम बिगड़

जाएगा।

(पिताजी की आवाज आती है।) अमित कहाँ हो ? लो सम्भालो अपने उपहार।

(पंचम दृश्य)

(आधी रात का समय है। अमित दादी अम्मा की कोठरी के दरवाजे पर खड़ा है। उसके हाथों में पकवान से सजी थाली है।)

अमित– (धीमे स्वर में पुकारता हुआ) दादी अम्मा... ओ दादी अम्मा सो गई क्या ?

दादी अम्मा– (अन्दर से) अमित बेटे ? अरे! इतनी रात को ?

अमित– दरवाजा खोलो दादी अम्मा! आज मेरा जन्मदिन है न। मैं आपसे आशीर्वाद लेने आया हूँ।

दादी अम्मा– (दरवाजा खोलकर विह्वल स्वर में) ओहो! अमित! मेरे लाल!

अमित– (पकवान की थाली स्टूल पर रखकर) वहाँ क्यों नहीं आई दादी अम्मा ? आप मुझे झूठा प्यार करती हो। जाओ मैं आपसे नहीं बोलूँगा। आपके लिए लड्डू लाया हूँ। खा लेना। (जाने के लिए मुड़ता है।)

दादी अम्मा– (अमित को बाहों में भरकर भर्राए स्वर में) तू मेरे कलेजे का टुकड़ा है।

अमित– मुझे अपने हाथ से खिलाओ न दादी अम्मा।

(दादी अम्मा हर्ष से छलछला उठती है। बड़े प्यार से अमित के मुँह में कौर डालती है।)

(षष्ठम् दृश्य)

(अमित की माँ की आवाज सुनाई देती है।)

माँ– माँजी! अपना खाना ले जाइए।

(दादी अम्मा का क्षीण स्वर सुनाई पड़ता है।) आई बहूरानी।

(दादी अम्मा लठिया ठुकठुकाती हाथ में चीनी मिट्टी की प्लेट कटोरा लिए हाँफती–काँपती रसोईघर की ओर चली आ रही है। एकाएक उन्हें खाँसी का दौरा पड़ता है। ठांय.. ठुक्क.. रसोई की देहरी की ठोकर लग जाती है, दादी अम्मा मुँह के बल गिर पड़ती हैं। चीनी मिट्टी के बर्तन फर्श पर गिरकर चकनाचूर हो जाते हैं।)

माँ– (दौड़कर चीखती है) ओह! सत्यानाश।

पिताजी– (दौड़कर आते हैं) क्या हुआ क्या ?

अमित– (झपटकर दादी अम्मा को उठाते हुए) अरे... रे... रे...। बेचारी दादी अम्मा बहुत जोर से गिरी हैं। बड़ी चोट आई होगी।

दादी अम्मा– (हाँफती–काँपती, सहमती हुई) पैर संभल नहीं पाया, बहूरानी।

माँ– (तुनककर) आपका पैर तो कभी नहीं संभलता। हुँह! तीसरी बार बर्तन तोड़ा है आपने।

अमित– हाँ! यह तो तुमने बहुत बुरा किया दादी अम्मा। खाने के बर्तन तोड़ डाले। जब माँ–पिताजी बूढ़े होंगे तब मैं इन्हें किसमें खाना दूँगा ?

पिताजी– (तड़पकर) अमित, तुम्हारा दिमाग ठिकाने तो है ?

माँ– (तिलमिलाए स्वर में) अरे शैतान! तू हमें मिट्टी के बर्तनों में खिलाएगा।

अमित– (भोलेपन से) आप भी तो दादी अम्मा को मिट्टी के बर्तनों में खाना देते हैं ?

माँ–पिताजी– (सम्मिलित बुझा स्वर) अमित! मेरे बेटे ऐसा मत कहो।

दादी अम्मा– (कहराती हुई) न, अमित बेटे! ऐसा नहीं कहते।

(शर्म और पश्चाताप से माँ–पिताजी का सिर झुक जाता है। पिताजी आगे बढ़कर दादी अम्मा को संभालते हैं और माँ टूटे हुए बर्तन को समेटने लगती है।)

(पर्दा गिरता है।)

राह दिखाओ

सड़क पार करने को अंधी,
बुढ़िया सबसे विनती करती।
लोग पास से आते–जाते,
भीड़ न उसकी बातें सुनती
सभी सोचते, किसको फुर्सत,
जो अंधी को राह दिखाएँ
बहुत काम करने को बाकी,
हम क्यों अपना समय गवाएँ
पढ़कर विद्यालय से आती,
नन्ही पिंकी उसी राह से।
सुनकर वह बुढ़िया की विनती,
आई बोली बड़े चाव से
''माँ! तुम मेरा हाथ पकड़ लो,
तुम्हें सड़क मैं पार करा दूँ
अगर नहीं तुम जा पाओ तो,
मैं तुमको घर तक पहुँचा दूँ''
''जुग–जुग जियो दुलारी बेटी,''
बुढ़िया गद्–गद् होकर बोली।
''यह तो है कर्त्तव्य हमारा,''
विहँस उठी फिर पिंकी भोली।

आसमान में नदी

अम्मा! यह बतलाओ मुझको,
आता भला कहाँ से पानी ?
आसमान में कहीं नदी है,
उसमें कितना–कितना पानी
सारी दुनिया पर बरसाता,
कौन भला है ऐसा दानी।
मानसून जब टकराते हैं,
गलता बादल, झरता पानी
इसे न कोई अचरज समझो,
यह है, सच्ची, सरल कहानी।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

निकम्मा
अरे हरिया! क्या कर रहा है? मेरे जूते पॉलिश कर दिए या नहीं?
कर रहा हूं मालिक, दूसरा जूता हाथ में है...
पहले वाला तो हो गया..ला..
..बस, दूसरे के होते ही पहले वाला उठा लूंगा मालिक..

अंधविश्वासी महाराज और गोपाल

– तपेश भौमिक

उन दिनों महाराज कृष्णचंद्र कुछ दिनों से अंधविश्वासी बनते जा रहे थे। शकुन–अपशकुन जैसी बे सिर–पैर की बातों को लेकर दरबार में काफी चर्चाएँ होने लगी थीं। ऐसे अवसरों पर गोपाल की चुप्पी महाराज को काफी खटकने लगी थी। इस कारण महाराज गोपाल से उखड़े–उखड़े से रहने लगे थे। इन अवसरों पर मंत्री अपनी मूर्खतापूर्ण बातों से महाराज के दिल बहलाने में कोई कमी नहीं छोड़ता जबकि कभी–कभी गोपाल उन बातों का खण्डन भी करता।

एक रात राजमहल में रात–भर यात्रा–गान (मुक्त मंचीय नृत्य नाटक) होने के कारण रात के अंतिम प्रहर को सारे सभासद और अन्य कर्मचारी दरबार और अतिथिशाला में ही सो गए थे। प्रात:काल गोपाल नियमानुसार पाँच बजते ही नदी में स्नान के लिए जाने लगा। तभी महाराज की नींद भी उचट गई थी। उन्हें भी प्रात: भ्रमण के लिए निकलना था। महाराज अतिथिशाला की ओर यह देखने के लिए, गए कि कौन–कौन तब तक जाग चुके हैं। महाराज के अतिथिगृह में आते ही गोपाल मिल गया। गोपाल से भेंट होते ही उनके दिमाग में यह बात आई कि आज तो सुबह–सवेरे गोपाल का मुख–दर्शन हो गया और तय है कि सारा दिन हँसते–मुस्कुराते हुए ही बीत जाए।

तय हुआ कि पहले बाग में टहला जाए और बाद में नदी में स्नान किया जाए। महाराज गोपाल से इस बात की चर्चा करने लगे कि किस कलाकार का अभिनय कैसा रहा ? वे बातचीत में इतने खो गए कि टहलते हुए पेड़ के एक पतले से ठूँठ से टकराकर वे औंधे मुँह गिर पड़े।

आगे जमीन पक्की थी जिस कारण उनके दो दाँत टूट गए। गोपाल ने उन्हें सहारा देकर तुरंत उठाया और राजवैद्य जी को बुलवा कर मरहम पट्टी

भी करवा दी। इस पर महाराज जी को खुश होना था। लेकिन बात उल्टी पड़ गई थी। वे गोपाल की ओर खा जाने वाली दृष्टि से घूरने लगे। उन्होंने मंत्री जी को संकेतों से कुछ कहा। मंत्री ने गोपाल को डाँटकर कहा कि वह चुपचाप कठघरे में जाकर खड़ा हो जाए।

तब तक सभा लग चुकी थी। राजवैद्य ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। सारी सभा गोपाल के मुख दर्शन को ही दोषी ठहराने लगी। महाराज कुछ उधेड़बुन में पड़कर अपनी सम्मति नहीं दे पा रहे थे। उधर गोपाल के बारे में सभा में उल्टी–सीधी बातें होने लगीं। मंत्री ने आव देखा न ताव सीधे गोपाल को सूली पर चढ़ाने को कह दिया।

अब तक गोपाल के धीरज का बाँध टूट चुका था। मंत्री ने नियमानुसार गोपाल से कहा कि वह अपना पक्ष रख सकता है। इस पर गोपाल ने हाथ जोड़कर महाराज से विनय की– ''महाराज! मैंने आपका नमक खाया है। आप मेरे लिए माई–बाप हैं। मैंने कभी आपके सामने सिर उठाकर बातें नहीं की लेकिन आज कुछ ऐसा कहने से अपने–आपको रोक नहीं पा रहा हूँ।''

''महाराज! आप मूर्ख पार्षदों के बहकावे में आकर अंधविश्वासी बन गए हैं। क्षमा करें जिस प्रकार आपने सुबह सवेरे मेरा मुँह देखा था ठीक उसी प्रकार मैंने भी आपका मुँह देखा था। आपके तो दो दाँत टूटे लेकिन मेरे तो जान के ही लाले पड़ गए। अब आप ही बताइए कि किसका मुख दर्शन कितना अपशकुन का कारण है?'' इतना कहना था कि सारी सभा ''साधु–साधु'' कहकर एक बारगी शोर कर उठी।

महाराज को अपनी गलती का अनुभव हो चुका था। उन्होंने फिर एक बार कई बार की भाँति कभी मंत्री के बहकावे में न आने की शपथ ली।

– गुड़ियाहाटी, कूचबिहार
(पश्चिम बंगाल)

छः अँगुल मुस्कान

पति– सब्जी में नमक नहीं है।

पत्नी– वह क्या है न, सब्जी थोड़ी जल गई थी।

पति– तो सब्जी में नमक क्यों नहीं डाला?

पत्नी– हम लोग संस्कारी परिवार से हैं। जले पर नमक नहीं छिड़कते।

*****

एक आदमी डॉक्टर के पास गया– डॉक्टर सा'ब! बुखार आए गया है। डॉ. ने चेक किया और दवाइयाँ लिखने लगा।

आदमी– डॉक्टर साहब...! कड़वी दवा न लिखना।

डॉक्टर– दवाइयाँ लिखने लगा।

आदमी– डॉक्टर सा'ब! सुनो... कड़वी दवा न लिखना।

डॉक्टर को गुस्सा आ गया और बोला– तो क्या रसगुल्ला लिख दें का....?

*****

पुलिस अफसर सिपाही से– जब तुम्हें पता था कि चोर भागकर कहाँ छिपा है, तो तुमने उसको पकड़ा क्यों नहीं?

सिपाही– क्या करता साहब! चोर जिस घर में छिपा था, उसके दरवाजे पर लिखा था अंदर आना मना है।

*****

मरीज– मुझे बीमारी है कि खाने के बाद भूख नहीं लगती, सोने के बाद नींद नहीं आती, काम करूँ तो थक जाता हूँ।

डॉक्टर– सारी रात धूप में बैठो, ठीक हो जाओगे।

ऋजुता को पेंसिल मिली

– डॉ. इन्दु गुप्ता

ऋजुता ने शाला से लौटकर अपना बस्ता खोला और उसमें से एक पेंसिल निकालकर दिखलाते हुए बोली– ''आज न यह पेंसिल मुझे शाला के बगीचे में पड़ी हुई मिली। देखो न दादी माँ! गुलाबी फूलों और रंग–बिरंगी तितलियों के डिजाइन वाली या पेंसिल कितनी सुंदर है। है न! यह है भी एकदम नई। बस मैं इसे अभी अपने शार्पनर से तराशकर, आज इसी से अपने विद्यालय का काम करूँगी।''

''हूँ, परन्तु बेटा! इस प्रकार किसी की वस्तु उठा लाना तो बहुत बुरा होता है। तुम्हारे पास अपनी पेंसिल हैं न! तुम उन्हीं से काम करो।''

''परन्तु दादी माँ! यह पेंसिल किसी की भी नहीं है। यह तो मुझे रास्ते में गिरी हुई मिली है।'' दादी माँ की नाराजगी वाली भंगिमा देखकर ऋजुता ने तर्क दिया।

''लेकिन बेटा! यह अवश्य वहाँ किसी की गिर गई होगी। जिस किसी की भी यह पेंसिल रही होगी वह बच्चा तो निश्चित ही बहुत परेशान और दुखी होगा। हो सकता है, पेंसिल खोने के कारण उसे अपने माँ–पिताजी से डाँट भी खाना पड़े।

''हाँ दादी माँ! दुखी तो वह होगा क्योंकि यह पेंसिल है भी तो बहुत सुंदर।''

''देखो बेटा! हमें किसी की चीज नहीं उठानी चाहिए। हो सकता है, वह बच्चा वहाँ उद्यान में अपनी पेंसिल को खोजने के लिए आया भी हो; परन्तु तुमने तो यह पेंसिल पहले ही उठाकर अपने पास रख ली थी, इसलिए उसे कैसे मिलती? यदि पेंसिल वहीं रखी रहती तो शायद उसे मिल ही जाती।''

''ओ.... अच्छा! परन्तु दादी माँ! आपको कैसे पता?''

''वह इस तरह कि इस विषय में मैंने बहुत पहले एक प्रसंग पढ़ा था। चलो तुम्हें भी सुनाती हूँ।''

''महाराष्ट्र में एक महान सिद्ध संत हुए हैं, तुकड़ोजी महाराज! जो अपनी समाज सेवा, भक्ति और आत्मबोध के भजनों के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें भारत के उस समय के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने एक विशाल समारोह में सादर 'राष्ट्र–संत' के सम्मान से प्रतिष्ठित भी किया था।

वही राष्ट्रसंत तुकड़ो जी महाराज एक बार भारतीय प्रतिनिधि मंडल के एक सदस्य के रूप में जापान गए हुए थे। वहाँ उन्हें विश्वधर्म सम्मेलन में भागीदारी करनी थी।

तुकड़ो जी वहाँ एक होटल में ठहरे हुए थे। प्रातः काल में जब संत तुकड़ो जी लॉन में सैर कर रहे थे, उस समय उन्होंने घास पर रुपयों की एक गड्डी पड़ी हुई देखी।

संत तुकड़ो जी जब अगले दिन प्रात: भी उसी लॉन में सैर करने पहुँचे। उन्होंने देखा कि वह नोटों की गड्डी अभी भी उसी स्थान पर ज्यों कि त्यों पड़ी हुई है। यह देखकर संत जी को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने होटल के मैनेजर को बुलवाकर पूछा– ''भाई! यह नोटों की गड्डी कल से इस बगीचे में पड़ी हुई है। इसे अभी तक किसी ने नहीं उठाया। क्या आपके देश में लालची, चोर या अवसरवादी नहीं होते?''

''स्वामीजी! मेरा देश भगवान बुद्ध का अनुयायी है। हम लोग किसी और के धन और सामान को मिट्टी के समान समझते हैं और कभी नहीं उठाते। हम अपनी मेहनत की कमाई पर विश्वास करते हैं। नोटों की यह गड्डी जिसकी भी है, वह अपने आप इसे उठाकर ले जाएगा।''

होटल के मैनेजर ने विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया। मैनेजर के उत्तर में उनको जापान के देशवासियों के अच्छेपन के साथ–साथ उनकी प्रगति का भी रहस्य समझ में आ गया।

संत जी ने कहा– ''धन्य हैं आप लोग।''

''तो ऋजुता बेटे इसलिए मनुष्य को हमेशा अपने पास जो और जितना है उसमें ही प्रसन्न और संतुष्ट रहना चाहिए।'' दूसरों की वस्तुओं को नहीं लेना चाहिए। तभी तो कहते हैं कि 'जो प्राप्त है वही पर्याप्त है'!''

''मुझे समझ में आ गया है दादी माँ! मैं वचन देती हूँ कि आगे से किसी की कोई भी वस्तु नहीं उठाऊँगी। परन्तु अब मैं इस पेंसिल का क्या करूँ, इसे उस बच्चे तक पहुँचाने का अब आप ही कोई उपाय बतलाइए न।''

''अच्छी बात है. हूँ, तो बेटा! तुम ऐसा करना कि कल इसे अपने विद्यालय की अध्यापिका को दे देना। उनके कहना कि वह प्रार्थना–सभा में विद्यालय के सभी बच्चों को यह पेंसिल दिखाकर पूछ लें कि यह किसकी है। जिस भी बच्चे की यह पेंसिल होगी, वह आकर इसे ले जाएगा। ठीक है न...।''

''अरे वाह दादी माँ! यह तो बहुत ही अच्छा उपाय रहेगा। मैं अवश्य ऐसा ही करूँगी।

आपका बहुत–बहुत धन्यवाद मेरी प्यारी दादी माँ!'' कहकर ऋजुता अपनी दादी माँ से लिपट गई।

– फरीदाबाद (हरियाणा)

बताओ जरा

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु जहाँ बने बलिदानी।
आज नहीं वह पावन धरती भारत में, कैसी हैरानी।।
दुष्ट पाक के पंजे से है उसको मुक्त कराना।
लव ने जिसे बनाया था तुम उसका नाम बताना।।

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को तुम शीश नवाओ।
किस दिन वे फाँसी पर झूले वह दिनांक बतलाओ।।
रावी के तट पर बसा हुआ लाहौर अगर बतलाता।
उन तीनों के बलिदानों की गाथा हमें सुनाता।

(लाहौर) (२३.०३.१९३१)

अवन्तीबाई लोधी

– स्नेहलता

ज़िन्दगी वादे फ़ना तुझको मिलेगी हसरत
तेरा जीना तेरे मरने की बदौलत होगा।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने वाले शहीदे आज़म अशफ़ाकउल्ला का यह शेर ऐसी तमाम शख़्सियतों के लिए है जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के देश–प्रेम की ख़ातिर, सम्मान की ख़ातिर अपना बलिदान देकर जनता में क्राँति की प्रेरणा दी।

हजारों लाखों ऐसी महिलाओं ने ऐसे–ऐसे कार्य किए कि जिसे सुनकर दाँतों तले अँगुली दबाई जा सके। ऐसी तमाम वीरांगनाएँ हुईं जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। अवन्तीबाई लोधी भी उनमें से एक थीं।

अवन्तीबाई रामगढ़ के राजा विक्रमादित्य सिंह की पत्नी थीं। जब यह बहुत छोटी थीं तभी इनका विवाह राजा विक्रमादित्य के साथ हो गया था। देश में अँग्रेजों का राज्य था। अँग्रेजों ने तरह–तरह की चालें चलकर देसी राजाओं के राज्यों को अपने अधीन कर लिया था।

वर्ष १८५४–५५ ईस्वी में अँग्रेजों ने रामगढ़ का राज्य हथियाने की नई चाल चली। उन्होंने राजा विक्रमादित्य पर यह आरोप लगाया कि राजा विक्रमादित्य अभी बहुत कम आयु के हैं उन्हें राज्य पर शासन करने का कोई अनुभव व ज्ञान नहीं है अत: कोर्ट ऑफ वार्डस् के अंतर्गत उनका राज्य कम्पनी शासन के अधीन कर लिया।

राजा विक्रमादित्य को यह बात बहुत बुरी लगी और उन्होंने इसका विरोध किया। विक्रमादित्य ने प्रिवी कौंसिल में इसके विरुद्ध अपील दायर की परन्तु उनकी अपील पर कोई सुनवाई नहीं हुई। अँग्रेजों ने उनके शासन पर कब्जा यथावत रखा। रानी अवन्तीबाई और महाराजा विक्रमादित्य को यह बात बहुत बुरी लगी उन्होंने अँग्रेजों का विरोध करने का निर्णय किया परन्तु दुर्भाग्य से कुछ ही दिनों बाद राजा विक्रमादित्य की मृत्यु हो गई। रानी अवन्तीबाई अकेली रह गई।

राजा विक्रमादित्य पर हुए अन्याय से रानी अवन्तीबाई को बहुत दु:ख हुआ उन्होंने अँग्रेजों से बदला लेने की ठानी। उस समय पूरे उत्तर भारत में क्राँति की ज्वाला सुलग रही थी।

राजा, महाराजा, नवाब, ताल्लुकेदार सभी अँग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित थे। सभी ने अँग्रेजों के विरुद्ध एक जनमोर्चा तैयार करने की गुप्त योजना बनाई।

उस समय क्राँति के लिए एक गुप्त संदेश रखा वह था चपातियाँ भिजवाना। चपाती भेजने का अर्थ था कि जो व्यक्ति उन चपातियों को स्वीकार कर लेगा उसे सामूहिक क्राँति के लिए प्रण करना होगा। लोगों ने ऊँच–नीच हिन्दू, मुसलमान का भेदभाव छोड़कर घर–घर जाकर चपाती बाँटने का काम प्रारंभ किया।

रानी अवन्तीबाई ने अपने पति विक्रमादित्य सिंह का बदला लेने के लिए मण्डल के राजकुमार रघुनाथ शाह एवं कानपुर के पेशवा नाना साहब के साथ मिलकर जनक्राँति तैयार करने के लिए स्थान–स्थान पर चपातियाँ भिजवाईं।

लोगों में धीरे–धीरे यह जागृति फैलाने का प्रयत्न किया कि यदि सभी लोग साथ मिलकर अँग्रेजों के विरुद्ध एकजुट हो जाएँ तब अँग्रेजों को यहाँ से खदेड़ना संभव हो सकता है। रानी अवन्तीबाई ने कहा कि यह समय लोगों में एकता रखने का है। बैर भाव भूलकर सब लोग एकजुट हो जाओ। उन्होंने अपने क्षेत्र के समस्त लोधियों, कल्चुरियों, ब्राह्मणों एवं

राजपूतों के साथ-साथ आदिवासी कबीलों के प्रतिष्ठित जनों को भी कागज की पुड़िया भिजवाई जिस पर लिखा हुआ था कि-

''देश की रक्षा के लिए कमर कसो या चूड़ी पहनकर माथे पर सिन्दूर लगाकर घर में बैठ जाओ। तुम्हें धर्म, ईमान और देश की सौगंध है जो इस कागज का पता दुश्मन को दो।''

यूँ तो क्राँतिकारियों ने अपनी सारी योजनाएँ बहुत ही गुप्त रूप से तैयार की थीं परन्तु दुर्भाग्यवश क्राँति का भंडाफोड़ समय से पहले ही हो गया और अँग्रेज अधिकारी सतर्क हो गए। दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, झाँसी सहित पूरे उत्तर भारत में मारो-काटो का शोर मच गया।

अँग्रेजों ने मंगलपांडे को फाँसी दे दी। गढ़ मण्डला का राजा रानी का शुभ चिन्तक था उसे भी अँग्रेजों ने फाँसी दे दी और मण्डल के किले पर अँग्रेजों ने कब्जा कर लिया। मण्डल का किला पाने से अँग्रेजों की ताकत बढ़ गई और रानी बिल्कुल असहाय हो गई।

रानी को इस स्थिति से बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ। रानी ने अँग्रेजों के विरुद्ध खुले आम युद्ध की घोषणा कर दी। स्वयं रानी घोड़े पर सवार होकर अपनी सेना के साथ युद्ध के मैदान में उतर आई। उसके रण-कौशल को देखकर अँग्रेजी सेना में खलबली मच गई। अँग्रेजी सेनाएँ डरकर पीछे भागने लगीं।

रानी ने बिछिया, घुंघरी और रामनगर पर कब्जा कर लिया। रानी ने अँग्रेजों के विरुद्ध छापामार युद्ध की नीति अपनाई। मध्यप्रदेश का यह क्षेत्र ऊँचा-नीचा पठारी क्षेत्र है।

रानी और उसके लोगों को वहाँ के चप्पे-चप्पे का ज्ञान था। रानी ने अपने सरदारों से कहा कि खुले मैदान में लड़ने के बजाय क्यों न अचानक अँग्रेजों पर हमला बोला जाए और उन्हें लूटकर हमारी सेनाएँ छुप

जाएँगी यही हमारे लिए कारगर नीति होगी।

अँग्रेजी सेनाएँ संख्या बल में रानी की सेना से कहीं अधिक थीं। रानी की सेना ने खरमेर नदी पार कर रही अँग्रेजी सेना पर हमला बोल दिया। जब तक अँग्रेज संभले-संभले तब तक रानी की सेना गुम हो गई। इसी प्रकार सत्रह दिन तक रानी की सेना ने अँग्रेजी सेना को छकाया।

परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य था कि हम वर्ष १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम अँग्रेजों से नहीं हारे वरन् अपने ही देश के कुछ गद्दारों के कारण से ही हारे। १८वें दिन रीवा नरेश ने अपनी स्वामिभक्ति अँग्रेजों को दिखाने के लिए अपनी सेना अँग्रेजी सरकार की सहायता के लिए भेज दी।

रीवा नरेश की इस सेना में उसी क्षेत्र के लोग थे जिन्हें चप्पे-चप्पे की जानकारी थी।

रानी उस समय देवहार गढ़ की पहाड़ी पर युद्ध लड़ रही थी। अँग्रेजी सेना रानी की सेना से लगातार युद्ध हारती जा रही थी। युद्ध में अँग्रेजी सेना के पैर उखड़ने ही वाले थे कि उसी समय रीवा नरेश की सेना ने पीछे से रानी की सेना को घेर लिया।

अब रानी दोनों ओर से घिर चुकी थी। परन्तु फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। तभी एक गोली

सनसनाती हुई रानी की बाँह में लगी और बन्दूक उसके हाथ से छिटक गई। रानी को लगा कि अँग्रेजों के हाथों में पड़ने से अच्छा है कि मृत्यु को गले लगा लिया जाए।

अत: अपमान से बचने के लिए रानी आत्म बलिदान कर देती है। रानी की बहादुरी देखकर अँग्रेज अधिकारी भी दंग रह गए। रानी की कुछ श्वासें अभी शेष थीं। अँग्रेज अधिकारी बाडिन्गटन ने रानी से पूछा कि– ''आपकी आखिरी इच्छा क्या है?''

रानी ने कहा– ''आप मेरा भारत छोड़कर चले जाएँ। यदि नहीं गए तो भी मेरी संतानें एक न एक दिन तुम्हें वापिस भेज देगी। और हम स्वतंत्र होकर रहेंगे।''

रानी के इस बलिदान से रीवा नरेश की सेनाएँ बहुत प्रभावित हुईं और उन्हें अपने किए पर पश्चाताप होने लगा। परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

रानी अवन्तीबाई मर कर भी अमर हो गई। रानी ने जो अपनी जनता में क्राँति की चिंगारी पैदा की थी वह सुलगती रही और आखिर १५ अगस्त वर्ष १९४७ को रानी का सपना सच हुआ।

– लखनऊ (उ. प्र.)

स्तंभ – लोकमाता अहिल्याबाई होळकर

अद्‌भुत निर्माण

– अरविन्द जवळेकर

अहिल्या माता ने यह अनुभव किया कि देशभर के तीर्थ क्षेत्रों में बने मंदिरों का विधर्मी शासकों द्वारा बड़ी संख्या में विध्वंस किया गया है। इसलिए उन्होंने उन मंदिरों के पुनर्निर्माण का संकल्प किया।

उन्होंने देशभर से उत्तम राजमिस्त्रियों को एकत्रित कर उन्हें देश के सभी तीर्थ क्षेत्रों में खंडित किए गए मंदिरों के पुनर्निर्माण का कार्य सौंपा। इसके लिए उन्होंने राजकोष से राशि न लेते हुए, अपनी स्वयं की व्यक्तिगत संपत्ति से राशि व्यय की।

उन्होंने सभी तीर्थ क्षेत्रों में तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशालाएँ, बावड़ियाँ तथा नदियों के घाटों का निर्माण भी किया। विश्व के इतिहास में उनके अलावा अन्य किसी भी शासक द्वारा अपनी स्वयं की संपत्ति से इतने निर्माण कार्य किए जाने का कोई वर्णन नहीं मिलता। उन्होंने कह रखा था– ''मेरे राज्य में निर्माण का यह कार्य कभी भी रुकना नहीं चाहिए।'' उनके द्वारा कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से असम तक सभी तीर्थ क्षेत्रों में करवाए गए ये निर्माण कार्य आज भी बुलंदी से खड़े हैं और तीर्थ यात्रियों को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

झूठ और शिकायत

..तुम अपराधी हो तुम्हें इस जुर्म के लिए फांसी की सजा दी जाती है..

अपराधी ने अपनी भाषा में राजा को खूब कोसा और गालियां दी..

महामंत्री ये कैदी क्या कह रहा है?

महाराज ये कह रहा है जो राजा गुस्से को काबू में रखकर निर्णय देता है उसे तो ईश्वर भी मित्र बना लेता है और उस पर दया बरसाता है.

यह सुनकर राजा ने अपराधी की सजा एक कैद में बदल दी..

तभी दूसरे एक मंत्री ने राजा से कहा-

महाराज, कैदी ने ऐसी कोई बात नहीं बोली जैसी महामंत्री ने बताई वो तो महाराज की शान में गुस्ताखी कर रहा था.

फिर भी मंत्रीवर, ऐसा झूठ जो किसी की जान बचा ले उस शिकायत से बेहतर है जो फिर से किसी को मौत के दरवाजे वापस पहुंचा दे.

युधिष्ठिर जी की दिग्विजय

– मोहनलाल जोशी

एक बार युधिष्ठिर जी ने राजसूय यज्ञ करने का विचार किया। भीम ने जरासंध का वध कर ही दिया था। सम्पूर्ण पृथ्वीलोक में भूपालों (राजाओं) को जीतना था।

अर्जुन ने उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर दिव्य रथ और सेना से राजा भगदत्त को हराया। उसने हाटक किम्पुरुष और उत्तरकुरु पर विजय प्राप्त कर ली। भीमसेन ने पूर्व दिशा के अनेक देशों को जीता। सहदेव ने दक्षिण दिशा की ओर कूच किया। समुद्र तट तक सभी म्लेच्छ और दूसरे देश जीत लिए।

श्रीलंका जाने के लिए भीम के पुत्र घटोत्कच को बुलाया। घटोत्कच श्रीलंका गया। वहाँ विभीषण राज कर रहे थे। उन्होंने बहुत सारी धन–सम्पत्ति दी। नकुल ने पश्चिम में द्वारिका तक यात्रा की। कृष्ण ने प्रेम से ही नकुल को 'कर' दिया। इस प्रकार युधिष्ठिर जी की चारों दिशाओं की दिग्विजय यात्रा पूर्ण हुई।

राजसूय पर्व

युधिष्ठिर जी ने समस्त भूपालों को जीत लिया था। उसने श्रीकृष्ण की आज्ञा प्राप्त की। इस प्रकार युधिष्ठिर जी ने राजसूय यज्ञ की दीक्षा ली।

युधिष्ठिरजी ने सभी राजाओं को निमन्त्रण भेजा। कौरवों को बुलाने के लिए विशेष दूत भेजा। सभी इन्द्रप्रस्थ आ गए। युधिष्ठिर जी के सभा–भवन में राजाओं के रुकने की व्यवस्था की गई। द्वार पर कई मील लम्बी पँक्तियाँ थीं। सभी राजा उपहार दे रहे थे। अनेक राजा सभा–भवन के बाहर ही थे। द्वारिका से अनेक यादववंशी आये थे। विशाल यज्ञ प्रारम्भ होने वाला था। वहाँ देवर्षि नारद भी विराजमान थे। विदूर जी और भीष्म जी भी यज्ञ में पधारे। उन्होंने सभी राजाओं की सुखसुविधा का ध्यान रखा। ब्राह्मण और ऋत्विज अपना कार्य कर रहे थे। यज्ञ में आए सभी लोग बहुत संतुष्ट और प्रसन्न थे।

– बाड़मेर (राजस्थान)

प्रेस क्लब इन्दौर में स्मरणांजलि सभा

इन्दौर। २२ जनवरी २०२४ को प्रेसक्लब इन्दौर के अपने पूर्व अध्यक्ष श्री. कृष्णकुमार जी अष्ठाना को स्मरणांजलि अर्पित की।

सर्व श्री. अरविन्द तिवारी, प्रदीप जोशी, तपन सुगंधी, दिनेश गुप्ता, जयंत भिसे, ओम प्रकाश, शक्तिसिंह, गोपाल माहेश्वरी, जी. डी. अग्रवाल, अजीत सिंह नारंग, किशोर कोडवानी, डॉ. राकेश शिवहरे, मुकेश तिवारी, अर्पण जैन, श्रीमती ज्योति जैन, श्रीमती मालासिंह ठाकुर आदि ने भावसुमन अर्पित किए।

छोटी तितली बड़ी तितली

– इंजी. आशा शर्मा

पीलू तितली उड़कर आसमान को छूना चाहती है। जब से वह अंडा थी तब से ही। कैटरपिलर के रूप में क्रिसलिस में घुसी वह अपने शरीर के वयस्क होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

पंख मिलते ही पीलू उड़ने लगी और जब पीलू उड़ी तो ऐसी उड़ी कि उड़ती ही चली गई। पहले गुलाब के पौधे पर बैठी और फिर उसके बाद सेब के पेड़ पर... फिर थोड़ी और ऊँची उड़ान भरी और देवदार से होती हुई चीड़ के पेड़ की ऊपरी फुनगी पर जा बैठी। ऊपर देखा तो आकाश अधिक दूर नहीं था।

''कुछ ही देर में आसमान छू लूँगी।'' पीलू ने सोचा। मन में ये विचार आते ही उसकी उड़ान और भी अधिक तेज हो गई। पीलू ने फिर से उड़ना प्रारंभ किया और आकाश छूने चल दी। पीलू आँखें मींचे उड़ती ही जा रही थी।

अचानक उसे लगा मानो उसके पंख ठंडे होने लगे हैं और भारी भी। शायद पहाड़ों पर बर्फबारी हो रही थी। पीलू ने आसपास देखा लेकिन अब वहाँ कोई पेड़–पौधा भी नहीं था जहाँ वह कुछ देर बैठकर आराम कर सके।

पीलू फिर से उड़ने लगी। वह उड़ती जा रही थी। उड़ती ही जा रही थी। क्योंकि उड़ने के अलावा उसके पास कोई चारा भी नहीं था। उसके पंख अब बेजान होने लगे थे। वह गिर पड़ने वाली ही थी कि संभलने लगी। उसे पंखों में गर्माहट अनुभव होने लगी। पीलू ने देखा कि एक सुंदर बड़ी तितली ने उसे अपने नर्म पंखों में छिपा लिया है।

''तुम कौन हो ? तुम्हारे पंख भी मेरे जैसे ही हैं, बस मुझसे थोड़े से बड़े हैं। क्या तुम कोई बड़ी तितली हो ?'' पीलू ने आश्चर्य से पूछा।

''ऐसा ही कुछ समझ लो। माँ कहती है कि मैं परी हूँ। जब छोटी तितलियाँ दुःख परेशानी में होती हैं तब मैं उनकी सहायता करती हूँ।'' परी ने मुस्कुराते हुए कहा।

थोड़ी देर बाद परी ने उसे अपने पंखों में समेटा और कहा– ''चलो, तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ दूँ। फिर कभी इस प्रकार अकेली घर से इतनी दूर नहीं निकलना।''

''अब यहाँ से तुम्हें अकेले ही घर जाना है।'' कहते हुए परी ने उसे उसी चीड़ के पेड़ की फुनगी पर छोड़ दिया जहाँ से पीलू ने आसमान छूने के लिए उड़ना प्रारंभ किया था।

पीलू ने अपने पंखों को उड़ने के लिए तैयार किया और नीचे की ओर उड़ने लगी। बड़ी कठिनाई से वह सेब के पेड़ तक पहुँची।

अभी उसे गुलाब के पौधे तक नीचे उतरना था जहाँ उसकी माँ और बहनें रहती हैं। पीलू ने अपनी सारी ताकत लगाई और नीचे की ओर उड़ने लगी। उड़ते–उड़ते उसे नींद आ गई।

आवाजें सुनकर पीलू ने आँखें खोली। देखा तो वह बहुत–सी तितलियों से घिरी हुई थी। उसने अपने पंख फड़फड़ाए लेकिन वह उड़ नहीं सकी। उसके शरीर में बहुत तेज दर्द हो रहा था।

''ना ना! अभी कुछ मत करो, बस लेटी रहो। कुछ दिन में ठीक हो जाओगी तब उड़ना।'' माँ ने कहा। बहनें उसके आसपास उड़ने लगीं।

पीलू ने ध्यान से देखा। सब तितलियों के चेहरे उसे पहाड़ वाली बड़ी तितली जैसे लग रहे थे।

– बीकानेर
(राजस्थान)

पहेली

बाल पहेलियाँ

– गोविन्द भारद्वाज

(१)
मूँछ मरोड़े खड़े रहे जो,
मरते दम तक रहे आजाद।
नाम बताओ उनका भैया,
दिल से करें हम सब याद।।

(२)
हैट लगाए रहे जो सिर पर,
असेम्बली में गिराया बम।
चूम लिया फाँसी का फंदा,
जिसने कभी न की आँखें नम।।

(३)
आजादी का पहला सैनानी,
बात न गोरों की जिसने मानी।
क्राँति के बने प्रथम सिपाही,
करते उनकी हम याद कहानी।।

(४)
खूब लड़ी जो मर्दानी बनकर,
जिसे देख गोरे थर्राये थे।
अपनी झाँसी की कर रखवाली,
दुश्मन जिसने मार भगाए थे।।

(५)
राव रतन सिंह की पत्नी बन,
कर्त्तव्य तुरंत जिसने निभाया था।
मोह त्यागने किया विवश जो,
थाली में निज शीश सजाया था।।

– अजमेर (राजस्थान)

उत्तर– १) चंद्रशेखर आजाद। २) भगतसिंह। ३) मंगल पांडे। ४) रानी लक्ष्मीबाई। ५) हाड़ा रानी (सहेल कंवर)।

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे

– देवांशु वत्स

कहानी

वैभव की मुश्किल

– डॉ. रंजना जायसवाल

वैभव की वार्षिक परीक्षा प्रारंभ होने वाली थी। वैसे वैभव पढ़ाई में बहुत अच्छा था। हर विषय में उसकी अच्छी पकड़ थी और उसके अंक भी अच्छे आते थे पर उसे गणित से बहुत डर लगता था। वह हमेशा सोचता था कि सारी पढ़ाई कर लूँ और गणित को बाद में पढ़ लूँगा। पिताजी ने उसे इस बात के लिए कई बार टोका भी था।

''किसी चीज से भागने से मुश्किलें टल नहीं जाती बल्कि मुश्किलें बढ़ जाती हैं।''

पर वैभव को पिताजी की बात समझ में नहीं आती थी। उसके परीक्षा शुरू होने में केवल पन्द्रह दिन ही रह गए थे। उसने सारे विषयों की अच्छे से तैयारी कर ली थी।

आज से वह गणित की तैयारी प्रारंभ करने जा रहा था। जब उसने गणित की पुस्तक को खोला तो उसे लगा गणित का कोर्स तो बहुत बड़ा है और पन्द्रह दिन उसके लिए काफी कम हैं। इन पन्द्रह दिनों में बाकी विषयों को उसे बीच–बीच में दुहराना भी है। वैभव के डर के मारे–हाथ पैर फूलने लगे। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि गणित का इतना सारा कोर्स और बाकी की पढ़ाई वह कैसे पूरी करेगा?

वैभव एक अजीब–सी उलझन में था। वह सिर झुकाएँ बैठा हुआ था। रात के एक बज रहे थे उसके कमरे की लाइट जलती देख पिताजी उसके कमरे में चले आए।

''क्या हुआ वैभव तुम अभी तक सोए नहीं?'' पिताजी ने वैभव से पूछा।

''पिताजी! कुछ समझ में नहीं आ रहा।''

''क्या समझ नहीं आ रहा?''

वैभव ने सारी बात पिताजी से सामने खुलकर बोल दी। पिताजी भी चिंतित हो गए।

''मैं पढ़ाई कहाँ से प्रारंभ करूँ समझ नहीं आ रहा है। मैंने सोचा था कि गणित सबसे अंतिम में करूँगा तो याद भी रहेगा और सबसे पहला प्रश्नपत्र भी उसी का है पर मेरी कोई तैयारी नहीं है।''

पिताजी ने कड़क आवाज में कहा– ''पहली बात तो ये गणित जो है याद करने की नहीं प्रतिदिन अभ्यास करने की चीज है। तुम जितना इसका अभ्यास करोगे उतना ही तुम्हें गणित के सूत्र अच्छे से समझ में आएँगे।''

वैभव चुपचाप सिर झुकाए पिताजी की बात सुन रहा था। उससे अब गलती तो हो ही चुकी थी।

''तुम्हारे और विषय अभी तैयार हुए हैं कि नहीं?'' पिताजी ने पूछा।

''मैंने सारे विषय तैयार कर लिए थे बस गणित ही छोड़ दिया था कि उसे बाद में तैयार करूँगा।''

पिताजी चिंता में पड़ गए। पिताजी को अच्छी तरह से पता था कि वैभव का गणित कमजोर है और उसने इस विषय को सबसे आखिरी के लिए छोड़ रहा था।

''यह तो तुम्हारी सबसे बड़ी गलती है जिस विषय में तुम सबसे अधिक कमजोर हो तुमने उसे ही अंतिम क्रम के लिए छोड़ रखा है। जबकि ऐसे विषय जिन्हें समझने में समय लगता है उन्हें शुरू से पढ़ना प्रारंभ कर देना चाहिए। शुतुरमुर्ग खतरे के डर से अपना सिर बालू में छिपा लेता है तो क्या उससे खतरा टल जाता है। तुमने भी शुतुरमुर्ग की तरह ही गलती की है।''

''पिताजी! मुझसे अब गलती तो हो ही गई है। मुझे समझ में नहीं आ रहा अब मैं क्या करूँ। मैं पहला पाठ उठाता हूँ तो लगता है कि तीसरा पाठ महत्वपूर्ण है। तीसरा पाठ करना शुरू करता हूँ तो लगता है कुछ भी नहीं आता। मैं क्या करूँ। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।''

वैभव रूआंसा सा हो गया। पिताजी ने उसकी पुस्तकें लीं और वैभव से पूछा– ''इस पूरी पुस्तक में तुम्हें कौन–कौन से पाठ ऐसे लगते हैं जो तुम आसानी से कर सकते हो?''

''पिताजी! इस समय तो मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।''

घबराहट से वैभव के हाथ–पैर ठंडे हो गए थे। पिताजी ने उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा– ''घबराने की आवश्यकता नहीं है। अब जो हो गया सो हो गया। अब आगे की सोचो जब पानी गंदा हो तो उसे हिलाते नहीं बल्कि उसे वैसे ही शांत और स्थिर होने के लिए छोड़ देते हैं। जिससे गंदगी अपने आप नीचे बैठ जाती है।

इसी प्रकार जीवन में परेशानी आने पर बेचैन होने के बजाय शांत रहकर सोचने और विचार करने की आवश्यकता होती है। क्योंकि कोई भी समस्या इतनी बड़ी नहीं होती जिसका हल ना निकाला जा सके। तुम्हारी भी समस्या इतनी बड़ी नहीं है कि हल ना निकले। तुम्हारी समस्या का भी हल अवश्य निकलेगा।''

''मैं आपका मतलब नहीं समझा?''

''तुम्हारे पास समय की कमी है। ऐसा है पिछले वर्ष के प्रश्नपत्र को निकाल कर देखो और तुम्हारे शिक्षक ने कौन–कौन से पाठ को महत्वपूर्ण बताया है अब इस पर ध्यान दो। तुम्हारा समय भी बचेगा और तुम्हारी तैयारी भी ठीक से हो जाएगी।''

वैभव को पिताजी की बात कुछ हद तक समझ में आ रही थी।

''पिताजी! आप कह तो ठीक रहे हैं।''

''पर इस बार जो गलती की है वह भविष्य में ना हो इस बात का ध्यान रखना। सभी विषय एक साथ पढ़े जाने चाहिए जिससे अंत में इस तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।''

''पिताजी! आगे से मैं इस बात का ध्यान रखूँगा।'' वैभव को अपनी गलती का अनुभव हो चुका था। और उसने मन ही मन यह प्रण कर लिया था कि आगे से वह कभी भी ऐसी गलती नहीं करेगा।

– मिर्जापुर (उ. प्र.)

स्काउटमी

– रजनीकांत शुक्ल

''हमारा अगला मैच किस टीम से हैं?'' राजधानी जयपुर की फुटबॉल टीम के खिलाड़ी अर्जुन ने अपनी टीम के साथी वैभव से पूछा।

''सीकर जिले की टीम है। क्यों चिंता कर रहे हो?'' वैभव राठौर ने लापरवाही भरे अंदाज में अर्जुन को उत्तर दिया।

''चलो फिर तो हम आसानी से फाइनल में पहुँच जाएँगे।'' साथी मृत्युंजय ने चुटकी लेते हुए कहा।

''और क्या! हालाँकि वे लोग कुछ मैच जीत चुके हैं। किन्तु अब उनका मुकाबला हमारी टीम से होगा और हम.... हम तो उन्हें चुटकी बजाते चियूंटी जैसा मसल देंगे।'' वैभव ने हँसते हुए कहा।

''इन छोटे शहर वालों को भला दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेल फुटबॉल को खेलना कहाँ आता होगा?'' मृत्युंजय ने निश्चिंत होते हुए कहा।

''हाँ! बात यदि क्रिकेट की होती तो कुछ सोचा भी जा सकता था। क्योंकि हमारे देश में तो खेलों के नाम पर क्रिकेट ही छाया हुआ है।'' अर्जुन ने भी उसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

अर्जुन पन्द्रह वर्ष के थे जो दिल्ली के रहने वाले थे और उस समय जयश्री पेरीवाल इंटरनेशनल स्कूल में कक्षा नौ के छात्र थे जो महाराजपुरम् में स्थित था।

उनका चयन जयपुर की उस राज्य टीम में हुआ था। वे राज्य स्तर की उस प्रतियोगिता में भाग लेने के उद्देश्य से श्रीगंगानगर आए हुए थे। जहाँ उनका मुकाबला राज्य के विभिन्न जिलों से आने वाली फुटबॉल टीमों से होने वाला था।

इस समय टीम के सभी साथी अपनी टीम की जीत की संभावनाओं पर विचार–विमर्श कर रहे थे।

उनके आरम्भिक दो लीग मैच हो चुके थे और अब उनका अगला मुकाबला सीकर जिले की फुटबॉल टीम से होने जा रहा था। जिसके दमखम को लेकर उनकी आपस में यह चर्चा चल रही थी। उनके हिसाब से इतनी छोटी जगह से आने वाले टीम के खिलाड़ियों में हिम्मत तो हो सकती है किन्तु तकनीकि ज्ञान में तो हम उन्हें आसानी से मात दे देंगे।

अगले दिन सुबह जब मैदान में मुकाबला हुआ तो उस छोटी–सी जगह से आने वाली टीम के खिलाड़ियों से उस मैच को जीतने में उन्हें दाँतों तले पसीना आ गया। हालाँकि वह मैच वे लोग जीत तो गए किन्तु उनकी यह धारणा टूट गई कि छोटी जगह से आने वालों में दमखम नहीं होता।

अर्जुन की टीम अपने सारे तकनीकि कौशल के होते भी बड़ी मुश्किल से उस मैच को हारने से बचा पाई थी। विशेषकर विरोधी टीम के कुछ खिलाड़ियों की चपलता को देखकर अर्जुन की टीम के सदस्यों को दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ी थी।

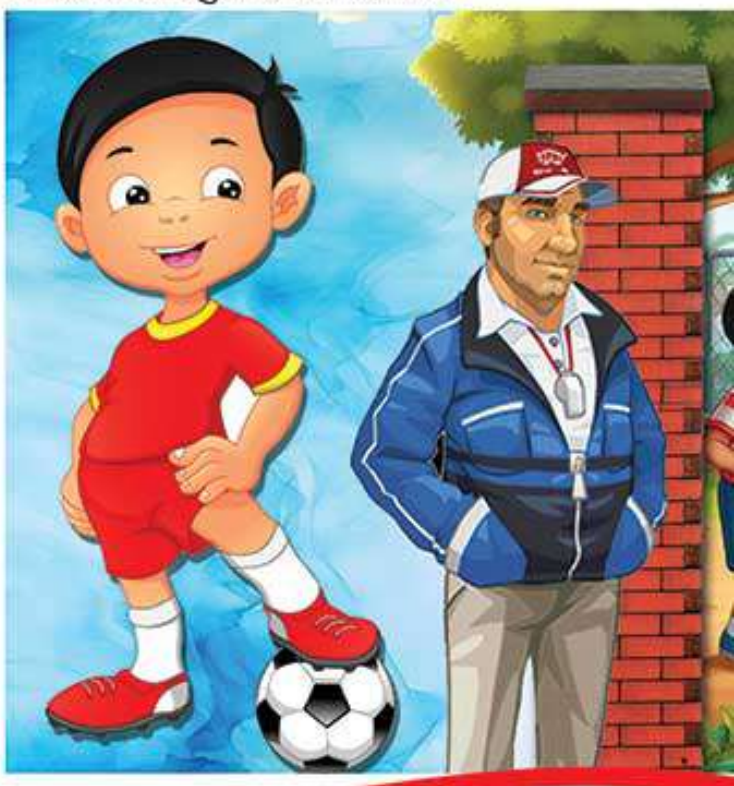

स्वयं अर्जुन ने अपने फुटबॉल प्रेम के चलते अनेक अन्तरराष्ट्रीय मुकाबले देखे थे। उसे उन खिलाड़ियों की फुर्ती किसी मायनों में किसी से कम न लगी। वे लोग यह मैच हार गए मगर देर रात तक उसकी जानदार प्रस्तुति का जादू अपना असर बनाए रहा। अगले मैचों में भी अर्जुन ने देखा कि कुछ अनाम अंजान खिलाड़ी गजब की फुर्ती से खेल खेल रहे हैं।

हमारा देश क्रिकेट में तो अच्छा कर रहा है किन्तु दुनिया के इस सबसे लोकप्रिय खेल में हमारा प्रदर्शन हमारे देश का प्रदर्शन अन्तरराष्ट्रीय स्तर का क्यों नहीं होता। जबकि अगर इन जैसे खिलाड़ियों को अगर ठीक ढंग से तराशा जाए तो यह विश्व पटल पर देश का नाम दुनिया में रोशन करने की क्षमता रखते हैं।

उस प्रतियोगिता से लौटने के बाद यह विचार अर्जुन के मन को मथता रहा। नई पीढ़ी जिस तरह से तकनीक की दीवानी है अर्जुन भी इससे अछूते नहीं थे। अब उनका ध्यान पूरी तरह एक ऐसी एप्लीकेशन को विकसित करने में लग गया जो ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को सामने लाने का मंच प्रदान करता हो।

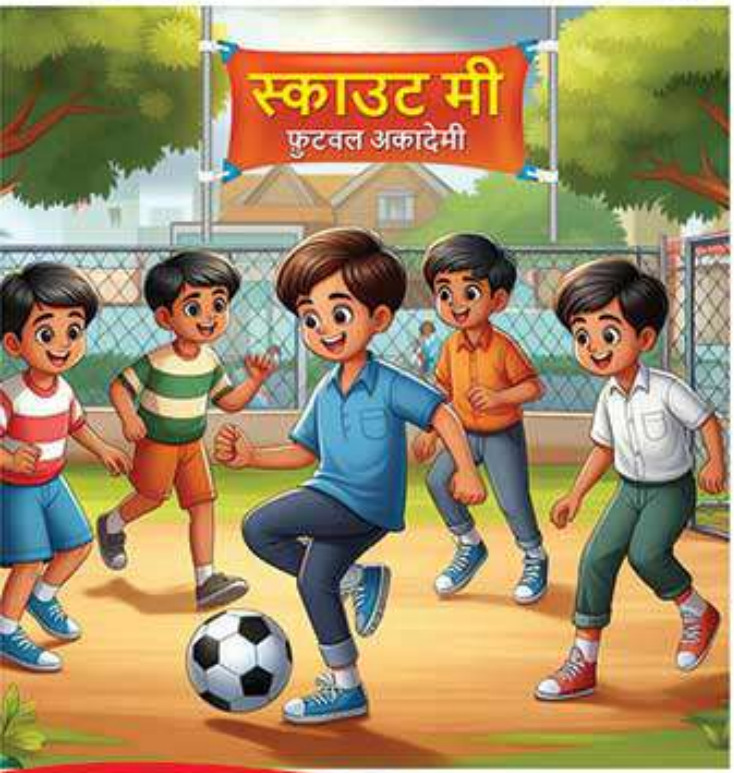

जिन्हें सही समय पर अवसर नहीं मिल पाता उन्हें उचित समय पर पहचान कर अवसर दिया जाए तो तस्वीर बदल सकती है। जहाँ चाह वहाँ राह जब एक बार मन में ठान लिया कि करना है तो देर कितनी भी लगे काम तो फिर हो ही जाता है। अधिक समय नहीं लगा और अर्जुन ने अपने बड़े भाई का सहयोग लेते हुए नवीं कक्षा के उस शैक्षिक सत्र को पूरा होते–होते एक मोबाइल आधारित पोर्टल विकसित कर लिया।

अब इसका काम के अनुरूप अच्छा–सा नाम रखने का अवसर था तो अर्जुन ने इंटरनेट खंगाला। तो उन्हें एक शब्द मिला स्काउट, स्काउट का अर्थ है खोज, पुराने समय में युद्ध के दौरान दुश्मन सेना की चाल या स्थितियों उनकी तैयारियों की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से जिन्हें भेजा जाता था उन्हें स्काउट कहते थे।

ये प्राय: बच्चे होते थे जिन पर कोई शक भी नहीं करता था। ये भिखारी, सामान बेचने वाले या अन्य ऐसे रूपों में दुश्मन खेमों में जाते और दुश्मन का सारा भेद आसानी से ले आते थे।

इसी के नाम पर ब्रिटिश सेना के एक अधिकारी लार्ड वेडेन पावेल ने विश्व की सबसे बड़ी युवाओं की संस्था 'स्काउटिंग' की स्थापना की थी।

अब आजकल ऐसे युद्ध होने बन्द हो गए हैं। उनका स्थान तकनीक ने ले लिया है। स्काउट मतलब नयी प्रतिभाओं की खोज अर्जुन को यह नाम अच्छा लगा और उन्होंने अपने पोर्टल का नाम स्काउटमी रखा।

पोर्टल विकसित होने पर अब इसको प्रयोग में लाने के लिए अर्जुन ने देश की फुटबॉल संस्थाओं से संपर्क किया और इसके सुखद परिणाम निकले।

आखिर उन्हें भी तो अच्छे खिलाड़ियों की तलाश रहती थी। अर्जुन के प्रयास रंग लाए और एक दिन वह भी आया जब पूरे देश के फुटबॉल संस्थाओं

के संघ 'अखिल भारतीय फुटबॉल संघ' ने अर्जुन के स्काउटमी पोर्टल को अपने आधिकारिक प्लेटफॉर्म के रूप में अपनाने की स्वीकृति दे दी।

इस तरह आज अर्जुन का बनाया स्काउटमी पोर्टल देश के कोने-कोने के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अखिल भारतीय फुटबॉल संघ, राज्य फुटबॉल संघ, फुटबॉल क्लब व एन.जी.ओ. से संपर्क जोड़ने का सशक्त माध्यम बनकर उभरा।

इस समय इसके तीस हजार से अधिक पंजीकृत खिलाड़ी, तीन हजार पाँच सौ स्काउट व एक हजार पाँच सौ से भी अधिक स्काउटिंग रिपोर्टें मौजूद हैं। जिनका उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्र से जमीनी स्तर से प्रतिभाओं की पहचान करना है।

वर्ष २०२० में देश के राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन के इस नवाचारी कार्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मित्रो!

सोचें हम कुछ नया, बने यह बेहतर दुनिया।
देखें नज़र उठाकर, कितनी सारी हैं कमियाँ।
वक़्त उठाए जो सवाल, वे हल करें डालें,
अंधकार हो जहाँ, वहीं पर दीया जला लें।।

– नई दिल्ली

'देवपुत्र' पत्रिका का अद्यतन दिसंबर २०२४ का अंक कल डाक से मिला है। यह सुखद है कि वर्ष १९७९ से प्रकाशित देवपुत्र पत्रिका के ४५ वर्षों के इतिहास में पहली बार एक ही रचनाकार के संपूर्ण लिखे को एक ही अंक में प्रकाशित किया गया है। बकौल संपादक-

'देवपुत्र' के इस विशिष्ट बाल प्रतिभा अंक में वर्ष २०२४ में भारत की महामहिम राष्ट्रपति सुश्री. द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से पुरस्कृत समाज-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के राष्ट्र के विभिन्न प्रांतों महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के माध्यम से चुने गए और साधारण प्रतिभाशाली बच्चों की सत्य कहानियाँ प्रस्तुत हैं।

इस सामग्री को आपके लिए रोचक एवं प्रेरक ढंग से तैयार किया है। विख्यात बाल साहित्य सर्जक एवं वीर बालकों पर सतत् लिखने वाले श्री. रजनीकांत जी शुक्ल ने। देवपुत्र अपने पाठकों के लिए उनकी इस अमूल्य रचनात्मक भेंट के लिए उनकी इस अमूल्य रचनात्मक भेंट के लिए हृदय से आभारी है।''

देवपुत्र के इस प्रयास की सराहना करते हुए हम चाहते हैं कि पत्रिका में बासी और थकी हुई रचनाओं को स्थान देने से अच्छा है कि इस तरह के प्रयोग किए जाएँ। जो चीजें पहले से छप चुकी हैं या जिन विषयों/रचनाकारों पर बार-बार लिखा जा चुका है, उन्हें देने का कोई औचित्य नहीं है।

– डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, लखनऊ (उ. प्र.)

देवपुत्र का दिसंबर अंक अद्भुत और प्रेरणादाई अंक है। राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त बच्चों की प्रतिभा, निष्ठा, त्याग, सेवा और बलिदान की अकूट भावना निश्चय ही अन्य बच्चों को जीवन में कुछ सार्थक करने की प्रेरणा देगी ही।

ऐसा सुंदर अंक सजाने की सकारात्मक दृष्टि और परिश्रम हेतु आपका और अंक रचना संकलनकर्ता श्री. रजनीकांत जी को बहुत साधुवाद।

– उमेश कुमार चौरसिया, अजमेर (राज.)

दोस्ती की नींव

– मीरा जैन

पिछले तीन–चार महीने से सारे मित्रों ने मयंक से बात करना बिल्कुल बंद कर दिया था। किन्तु होली के दिन दृश्य एकदम बदला हुआ था। सारे मित्र मिलकर स्नेह की बौछार करते हुए मयंक को ही पकड़–पकड़ कर रंग लगा रहे थे साथ ही मित्रों की इस प्रवृत्ति से आज मयंक भी बहुत प्रसन्न था।

होली खेलती हुई किशोरों की टोली में मयंक को देख चबूतरे पर बैठे रामलाल जी बोले आश्चर्य चकित हो व्यंग्यात्मक लहजे में बोले– ''कल तक तो तुम लोग मयंक से एकदम किनारा किए हुए थे। आज सुबह होलिका दहन का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मयंक को क्या मिला तुम सभी उसके आगे–पीछे मंडराने लगे।''

रंग खेल रहे बालकों के समूह में से एक ने उत्तर दिया– ''काका! यह सत्य है कि हम इसके होलिका दहन से ही प्रभावित होकर पुन: इसे अपना मित्र बना लिया है। इसने होलिका दहन की फोटो खींचकर हम लोगों को व्हाट्सएप पर भेजी थी और साथ ही लिखा था– मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मेरी इन खेल सामग्रियों से कहीं अधिक ऊपर तुम लोगों की दोस्ती है। तुम सभी जो चाहते थे आज वहीं करने जा रहा हूँ यह देखो चाइना डोर सहित मेरे घर में रखी चाइना निर्मित जितनी भी वस्तुएँ हैं उन सभी का होलिका दहन कर रहा हूँ। साथ ही प्रण करता हूँ कि अब जीवन में कभी भी चाइना में बने सामान को नहीं खरीदूँगा। और ना ही किसी से उपहार में लूँगा। पिछले सप्ताह मैंने अनुभव किया कि इन वस्तुओं का उपयोग देश ही नहीं मानवता के भी विरुद्ध है। जब पतंग उड़ाते हुए मेरे हाथों चायना डोर से एक चिड़िया की मृत्यु हो गई थी।''

– उज्जैन (म. प्र.)

बसंत बोली

– हरिन्दर सिंह गोगना

कक्षा पाँच में पढ़ती मीनू को एक बुरी आदत थी। वह कहीं कोई सुंदर–सा फूल लगा देखती तो टहनी से तोड़ लेती और कुछ पल उसकी खुशबू लेकर फेंक देती थी।

बसंत का मौसम आ चुका था। मीनू कुछ दिनों के लिए अपनी मौसी के घर आई हुई थी। मीनू की मौसेरी बहन भी पाँचवीं कक्षा की ही छात्रा थी। वार्षिक परीक्षाएँ समीप होने के कारण मीनू यहाँ आई थी ताकि उसका मन भी लगा रहे और दोनों मौसेरी बहनें पढ़ने में एक–दूसरे को सहयोग भी दे सकें।

मीनू की मौसी के बगीचे में ढेर से फूल खिले थे। मीनू प्रतिदिन कितने ही फूल शाखाओं से तोड़ लेती थी।

बसंत बहार को यह बहुत बुरा लगा। एक दिन जब मीनू बगीचे में फूल तोड़ने आई तो बसंत उससे बोली– ''ठहरो मीनू! फूल मत तोड़ो।''

''कौन?'' मीनू ने इधर–उधर देखते हुए कहा।

''मैं बसंत ऋतु बोल रही हूँ। तुम प्रतिदिन यहाँ आकर कितने फूलों को तोड़कर समय से पहले ही उनका अंत कर देती हो, यह अच्छी बात नहीं। फूलों में भी जीने की अभिलाषा होती है, पीड़ा का अनुभव

होता है। फूलों को खिले रहना पसंद होता है और सबसे अधिक प्रसन्नता होती है अपनी खुशबू बाँटने में। किन्तु यदि फूलों को समय से पहले ही तोड़ कर उनका जीवन समाप्त कर दिया जाए तो वह कैसे अपनी महक बाँटेंगे?''

मीनू मूर्ति सी बनी बसंत की बात सुन रही थी।

तभी बसंत फिर बोली– ''अच्छा एक बात का उत्तर दो। तुम यहाँ आई हो किस लिए पढ़ने के लिए न? यदि तुम मेहनत के बाद भी अनुत्तीर्ण हो जाओ तो तुम्हें कैसे लगेगा। तुम्हारी कितनी बदनामी होगी। तुम्हारा दिल दुखेगा सो अलग है न?''

''हाँ तो।'' मीनू बोली

''जब हम किसी को क्षति पहुँचाते हैं तो भगवान इसका दण्ड हमें अवश्य देते हैं। किस रूप में देते हैं यह कह नहीं सकते। हो सकता है तुम परीक्षा में असफल हो जाओ। यह फूल बोल नहीं सकते लेकिन जब तुम इन्हें शाखाओं से अलग कर देती हो तो न जाने यह तुम्हें कितनी बद्दुआएँ देते होंगे।'' कहकर बसंत चुप हो गई। मीनू को बसंत की तर्क से कही बात सुनकर अपनी भूल का अनुभूति हुआ और साथ ही याद आये माँ के बोल–

''मीनू बेटा! कभी भी किसी का मन मत दुखाओ और न किसी का बुरा करो। मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।''

मीनू को अनुभव हुआ जैसे बसंत ऋतु के रूप में माँ उसे समझाने आई हो। उसने उसी पल बसंत से वादा किया कि वह फिर कभी भी फूलों को टहनी से नहीं तोड़ेगी।

तभी उसने देखा बगीचे में सभी फूल पहले से अधिक ताजगी में खिल चुके थे जैसे उनका डाली से टूटने का डर जाता रहा था। यह देख मीनू भी खिल उठी और फूलों को प्यार से निहारने लगी।

– पटियाला
(पंजाब)

भूल–भुलैया

'घ' से 'घर'

किशोर कुमार को अपने घर जाना है। उसे घर का रास्ता ज्ञात नहीं। प्रिय मित्रो! अब आप किशोर को सही रास्ता तो बता दीजिए।

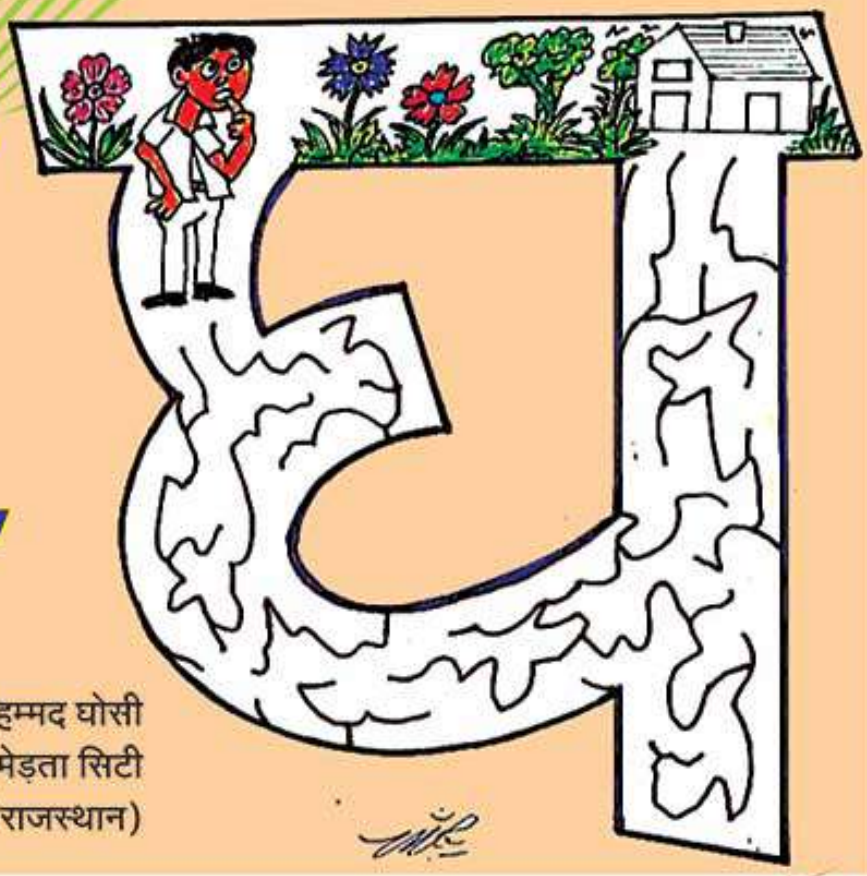

– चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी
(राजस्थान)

पुस्तक परिचय

सब्जियाँ खाओ स्वास्थ्य बनाओ

मूल्य- ४९५/-

डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल बच्चों के लिए उपयोगी अनेक विषयों पर रोचक साहित्य रचते रहते हैं। इस पुस्तक में उनकी सब्जियों पर सुन्दर कविताएँ प्रस्तुत हैं। एक-दो नहीं पूरी ४४ सब्जियों की जानकारी देती हैं ये बाल कविताएँ।

प्रकाशक- सुयोग्य प्रकाशन - W-116 ग्रेटर कैलाश-I नई दिल्ली-११००४८

आगे बढ़ते रहेंगे

मूल्य- २००/-

श्री. श्यामपलट पाण्डे सतत रचनाशील एक स्थापित बाल साहित्य साधक हैं। प्रस्तुत बाल कविता संग्रह आपकी ढ़ेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्द्धक कविताओं का अद्‌भुत खजाना है।

प्रकाशक- अविचल प्रकाशन, 'सावित्री' १५, वृन्दा विहार, अमृत आश्रम, पो. हरिपुर नायक ऊँचापुल हल्द्वानी, नैनीताल-२६३१३९ (उत्तराखण्ड)

मिल गई सफलता

मूल्य- ७५/-

डॉ. सतीश चन्द्र भगत बाल साहित्य संसार के जाने माने हस्ताक्षर है। असंख्य रचनाओं के सर्जक श्री. भगत की इस पुस्तक में १६ रोचक बाल कहानियाँ संग्रहित हैं। मनोरंजन ही नहीं जीवन के लिए मार्गदर्शक भी हैं ये कहानियाँ।

प्रकाशक- समीक्षा प्रकाशन, जे. के. मार्केट छोटी कल्याणी, मुजफ्फर, बिहार-८४२००१

सुनो कहानी नई पुरानी

मूल्य- १३०/-

बाल कहानियाँ बच्चों की बहुत पुरानी साथी हैं। न जाने कब से वे बच्चों को गुदगुदाती सिखाती, समझाती आई हैं। प्रसिद्ध बाल साहित्यकार किरण सिंह की इस कृति में ऐसी ही नई-पुरानी बाल कहानियों की छटा बिखरी हुई है।

प्रकाशक- वनिका पब्लिकेशन एन. ए. १६८, गली नं-६, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली-११००१८

पिंकी का सपना

मूल्य- १५०/-

प्रस्तुत पुस्तक में बाल साहित्य रचनाकार किरण सिंह की ३४ बाल कविताओं का रोचक संकलन हैं। बचपन के आँगन में अनेक विषयों को सुन्दरता से सजाकर ये प्रस्तुति अत्यन्त रोचक बन गई है।

प्रकाशक- वनिका पब्लिकेशन एन. ए. १६८, गली नं-६, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली-११००१८

राष्ट्राय स्वाहा इदं न मम ही जिनका जीवनव्रत है

– नारायण चौहान

(संघ के प्रथम प्रचारक : मा. बाबा साहब आपटे)

प्यारे बच्चो! नमस्कार।

मैं अपनी आत्मकथा में आपको बताना चाहता हूँ। यह जो मेरा कार्य सम्पूर्ण विश्व में यशस्वी हुआ है। उसके पीछे की शक्ति है देश के लिए त्याग पूर्ण जीवन जीने वाले युवा। जिन्हें श्रद्धापूर्वक हमारे कार्यकर्ता, प्रचारक कहते हैं। मैं बताना चाहता हूँ कि मेरी शाखाओं के माध्यम से समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य कैसे होता चला गया।

मेरे कार्य के विस्तार में समाज के गृहस्थ कार्यकर्ताओं का योगदान तो है ही परन्तु मेरे प्रचारक इस कार्य का आधार हैं।

आपको जिज्ञासा होगी ना आखिर अपने देश के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में समर्पित करने वाले प्रचारक कैसे बन जाते हैं? मैं बताना चाहता हूँ। संघ की शाखाओं में आकर गीत, व्यायाम योग खेल खेलते खेलते हमारी युवा शक्ति मेरे काम को अपना सब कुछ समझने लगते हैं। राष्ट्रभक्ति का ज्वार उन्हें सम्पूर्ण जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित होने की प्रेरणा देता है।

इस प्रकार ये युवा बिना गृहस्थ जीवन बसाए अपने व्यक्तिगत जीवन एवं आकांक्षाओं को त्यागकर पूरा जीवन राष्ट्र कार्य के लिए समर्पित कर देते हैं।

प्रचारक एक शब्द ही नहीं अपने आप में एक बहुत ही सम्मानित और दायित्व का बोध कराने वाली गौरवशाली परम्परा का नाम है।

समाज एवं राष्ट्र कार्य हेतु अनुशासन उच्च आदर्श रखते हुए समाज को दिशा देने का कार्य मेरे प्रचारक करते हैं।

नियमित दिनचर्या, संघ कार्य, मातृभूमि की सेवा की धुन कदाचित इन्हें सासांरिक कामनाएँ एवं व्यक्तिगत प्रसिद्धि स्पर्श भी नहीं कर पातीं।

आप सोच रहे होंगे प्रचारक रहते कहाँ होंगे? मेरे ये प्रचारकों का कोई स्थायी ठौर घर या कार्यालय नहीं। कार्यक्रम और कार्य अनुसार प्रवास की योजना बनाते हैं। मुख्यालय तो रहता है परन्तु वह केवल नाम मात्र का आवास।

इसी प्रकार मेरे ये कार्यकर्ताओं की भोजन की चिंता आप–सभी समाजजन करते हैं। इस प्रकार त्यागी, तपस्वी, सादा जीवन के ये कार्यकर्ता भारत माता को संसार में सबसे ऊँचे स्थान पर बैठाने के लिए दिन–रात कार्य करते हैं।

बाबा साहब आपटे मेरे प्रथम प्रचारक बने। सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। नागपुर में मेरा प्रभाव बढ़ा मैं देश के अन्य स्थानों में बढ़ना चाहता था। प्रचारक अनेक प्रदेशों में संघ कार्य के लिए निकल पड़े।

कार्य के विस्तार के साथ सम्पूर्ण देश से प्रचारक निकले।

मातृभूमि की सेवा की यह प्रचारक पद्धति संसार में अनूठी पद्धति है।

– इन्दौर
(म. प्र.)

आदर्श गौसेवा

– डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

विश्व प्रसिद्ध महाराज शकारि विक्रमादित्य अपने राज्य की प्रजा का कष्ट जानने के लिए अक्सर घूमते रहते थे। एक बार वे अपने घोड़े पर सवार होकर जा रहे थे। वह रास्ता जंगल से होकर जाता था। संध्या काल का समय था।

जल्दी से जंगल से बाहर निकल जाने के प्रयास में उन्होंने घोड़े के ऐड़ लगा दी। उसी समय एक गाय के भयग्रस्त डकराने की आवाज सुनाई दी। तुरन्त महाराज विक्रमादित्य ने अपने घोड़े को उसी दिशा की ओर मोड़ दिया।

उस समय वर्षाकाल था। नदी में बाढ़ आ जाने से नाले और तालाब सर्वत्र जल से भरे हुए थे। एक स्थान पर नाले में किनारे कीचड़ था और उस कीचड़ भरे दलदल में गाय बुरी तरह फँसकर छटपटा रही थी। वह कीचड़ से न निकल पाने पर डकरा रही थी।

शकारि विक्रमादित्य को दया आ गई। उन्होंने अपने घोड़े को वहीं खोल दिया। अपने कपड़े उतारकर, दलदल में घुसकर, गाय को बाहर निकालने का प्रयास करने लगे। महाराज स्वयं कीचड़ में लथपथ हो गए। उनके लिए अकेले गाय को निकालना सम्भव न था। अँधेरे ने इस कार्य को अधिक ही कठिन कर दिया।

उसी समय गाय की डकराहट सुनकर एक सिंह वहाँ आ गया। महाराजा का घोड़ा खुला था, सिंह की गंध पाकर वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। तब महाराज विक्रमादित्य ने अपनी कृपाण निकाल ली। गाय की प्रात: काल तक सुरक्षा करना आवश्यक था। ऐसे अंधकार के समय सिंह से युद्ध करना भी कठिन था। सिंह आक्रमण पर उतारू था और महाराज उसके हमले को रोक रहे थे।

वहाँ निकट ही एक बड़ा बरगद का पेड़ था। उस पेड़ पर बैठा एक तोता बोल उठा– ''महाराज! गाय की तो मृत्यु आ गई है। वह अभी नहीं मरेगी तो कल तक अवश्य मर जाएगी। आप बेवजह अपने प्राण दे रहे

हो ? अभी तो यह सिंह अकेला है। थोड़ी देर में सिंहनी व दूसरे जानवर भी आ सकते हैं। अत: आप सुरक्षा के लिए इस पेड़ पर चढ़ आइए।''

महाराज बोले– ''भाई! मेरे प्रति तुम्हारी जो कृपा है उसका मैं आभार व्यक्त करता हूँ। परन्तु तुम मुझे अधर्म का मार्ग न दिखलाओ। अपने प्राणों की रक्षा का प्रयास तो कीट–पतंगें भी कर लेते हैं। दूसरों की रक्षा में जो अपना जीवन दे सके, उसी जीव का जीवन धन्य है। जिसमें दया नहीं है, उसके तो सभी पुण्य कार्य व्यर्थ हैं। मेरे प्रयास का कुछ लाभ होगा या नहीं, यह देखना मेरा काम नहीं है। मुझे तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रयास करना ही है। इस गौ की सुरक्षा मेरा धर्म है, मैं अपने प्राण देकर भी इसे बचाने का प्रयास करूँगा।''

महाराज शकारि विक्रमादित्य सम्पूर्ण रात्रि भर गाय की सुरक्षा में जुटे रहे। लेकिन सूर्योदय से पूर्व जैसे ही कुछ प्रकाश हुआ महाराज के सामने वही सिंह देवराज इन्द्र के स्वरूप में प्रस्तुत होकर खड़ा हो गया। तोता बनकर बोलने वाले धर्मदेव भी अपने स्वरूप में आ गए।

साक्षात् भूदेवी गाय बनकर राजा की परीक्षा लेने में सम्मिलित थीं। उसने भी अपने दिव्य स्वरूप के दर्शन देकर महाराज की परीक्षा ली।

– कानपुर (उ. प्र.)

प्रेरक प्रसंग

देश सेवक का वेतन

– डॉ. विद्या श्रीवास्तव

प्रसिद्ध क्राँतिकारी सरदार भगतसिंह जी एक सम्पन्न परिवार से थे। लेकिन जब उन्होंने देश–सेवा का व्रत लिया तब वे अपने खर्च के लिए भी परिवार से कुछ भी नहीं लेते थे।

उन्होंने अपने स्वयं के बल पर अपना स्वावलंबी जीवन जीना प्रारंभ कर दिया था। एक बार कुछ लोगों ने उनसे प्रश्न किया– ''आप तो काफी सम्पन्न परिवार के व्यक्ति हैं। फिर आप परिवार से अपने लिए कुछ भी नहीं लेते ?''

भगतसिंह जी बोले– ''मैं परिवार पर बोझ बनकर देश–सेवा नहीं करना चाहता।''

जब क्राँतिकारी गतिविधियों के लिए धन की आवश्यकता हुई, तब तत्कालीन काँग्रेस कार्यकारिणी के प्रभावशाली सदस्य श्री. शार्दूलसिंह ने सरदार भगतसिंह को अपनी गुजर–बसर के लिए डेढ़ सौ रुपये मासिक वेतन पर लगा दिया। किन्तु सरदार भगतसिंह ने अपना वेतन तीस रुपये से अधिक स्वीकार नहीं किया।

वे बोले– ''मैं तो केवल देश–सेवा करने के लिए जीवित रहने का साधन चाहता हूँ। न कि अधिक पैसा अर्जित करके सुख–सुविधाओं में जीना। मेरी गुजर–बसर के लिए मात्र तीस रुपये ही पर्याप्त हैं।''

– ग्वालियर (म. प्र.)

लघुकथा

पेड़ रोने लगा

– राम मूरत 'राही'

पेड़ पर सुन्दर–सुन्दर फूल–पत्ते लगे हुए थे। जिसे देखकर राहगीर प्रफुल्लित होकर फूल–पत्तों की प्रशंसा किया करते थे। जिसे सुनकर पेड़ घमंड से फूला नहीं समाता था।

एक बार वह फूल–पत्तों से अकड़कर बोला– ''मेरे कारण राहगीर तुम लोगों की प्रशंसा करते हैं। तुम सभी को मेरा उपकार मानना चाहिए।''

पेड़ की बातें सुनकर फूल–पत्तों ने घमंडी पेड़ को कोई जवाब नहीं दिया और फिर वे दुखी होकर एक–एक कर पेड़ से झड़ गए और एक दिन ऐसा भी आया जब पेड़ फूल–पत्तों के बिना ठूँठ नजर आने लगा। तब वहाँ से जाने वाले उसकी प्रशंसा करना तो दूर? उसको ठूँठ कहकर पुकारने लगे और उसकी उपेक्षा करने लगे। इससे वह पेड़ दुखी रहने लगा।

एक बार वह भगवान से भरे गले से प्रार्थना करते हुए बोला– ''हे प्रभु! मुझे क्षमा कर दो। मैंने घमंड में आकर फूल–पत्तों का अपमान किया है। अब अकेला रहकर मैंने जाना कि फूल–पत्तों के कारण ही मेरी खूबसूरती थी। जिसके कारण राहगीर प्रशंसा किया करते थे, ना कि मेरे कारण।'' इतना कहकर पेड़ सिसक–सिसककर रोने लगा।

पश्चाताप के इन आँसुओं से पेड़ तर–बतर हो गया और फिर कुछ दिनों बाद ही उसके शरीर पर कोंपलें फूटने लगीं और धीरे–धीरे वह पेड़ पहले की तरह ही सुन्दर–सुन्दर फूल–पत्तों से लद गया।

– इन्दौर (म. प्र.)

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म–४ (नियम–८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	राकेश भावसार
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	राकेश भावसार
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार –पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं राकेश भावसार एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(राकेश भावसार)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

विद्याभारती म. भा. में श्रद्धांजलि सभा

(श्रद्धावनत संगठन मंत्री श्री. निखिलेश महेश्वरी एवं अन्य)

विद्या भारती मध्यभारत प्रांत के तत्वावधान में वरिष्ठ पत्रकार एवं देवपुत्र पत्रिका के संरक्षक श्री. कृष्ण कुमार अष्ठाना जी को श्रद्धांजलि देने हेतु एक भावपूर्ण सभा का आयोजन किया गया। श्री. अष्ठाना जी के देहावसान (१४ जनवरी २०२५) पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए इस सभा में विद्या भारती परिवार और समाज के प्रबुद्धजनों ने उन्हें अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मा. प्रांत संघचालक श्री. अशोक जी पाण्डेय और विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री. श्रीराम जी आरावकर, विद्याभारती के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र जी कान्हेरे सहित अन्य क्षेत्रीय और प्रांतीय अधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और समाज के प्रति उनके योगदान को याद किया।

कीर्तिशेष अष्ठानाजी को साहित्यकारों ने दी श्रद्धांजलि

श्री. मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर में समिति के उप-सभापति कीर्तिशेष श्री. कृष्ण कुमार अष्ठाना को काव्यांजलि के रूप में समर्पित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समिति के सभापति श्री. सत्तन ने कहा कि इस संसार में आए हुए व्यक्ति को जीवन-मरण से अवश्य ही गुजरना पड़ता है। उन्होंने कबीर की इन पंक्तियों को प्रस्तुत करते हुए आध्यात्मिक उपदेश दिया कि

मालिनि आवत देख कै कलियन कही पुकार।
फूले फूले चुन लिए, कालि हमारी बार।।

कार्यक्रम का संचालन कर प्रचार मंत्री हरेराम वाजपेयी ने किया। इस अवसर पर 'वीणा' के सम्पादक श्री. राकेश शर्मा, प्रधानमंत्री श्री. घनश्याम यादव, डॉ. अखिलेश राव, शांता पारेख, देवपुत्र के सम्पादक श्री. गोपाल माहेश्वरी, डॉ. आरती दुबे, श्री. राजेन्द्र पाण्डे, श्री. प्रदीप नवीन, श्री. जी. डी. अग्रवाल, मुकेश तिवारी, प्रभु त्रिवेदी, सदाशिव कौतुक, वसुधा गाडगिल, लक्ष्मीनारायण उग्र, रामचन्द्र अवस्थी, अर्थमंत्री राजेश शर्मा ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम में श्री. उमेश पारीख, संतोष मोहंती, डॉ. शशि निगम, सुरेखा सिसोदिया, नयन राठी, सुब्रतो रॉय, अरविन्द जोशी, अरविन्द ओझा आदि काफी संख्या में सुधीजन उपस्थित थे।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२५ | प्रेषण तिथि २८/०२/२०२५ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

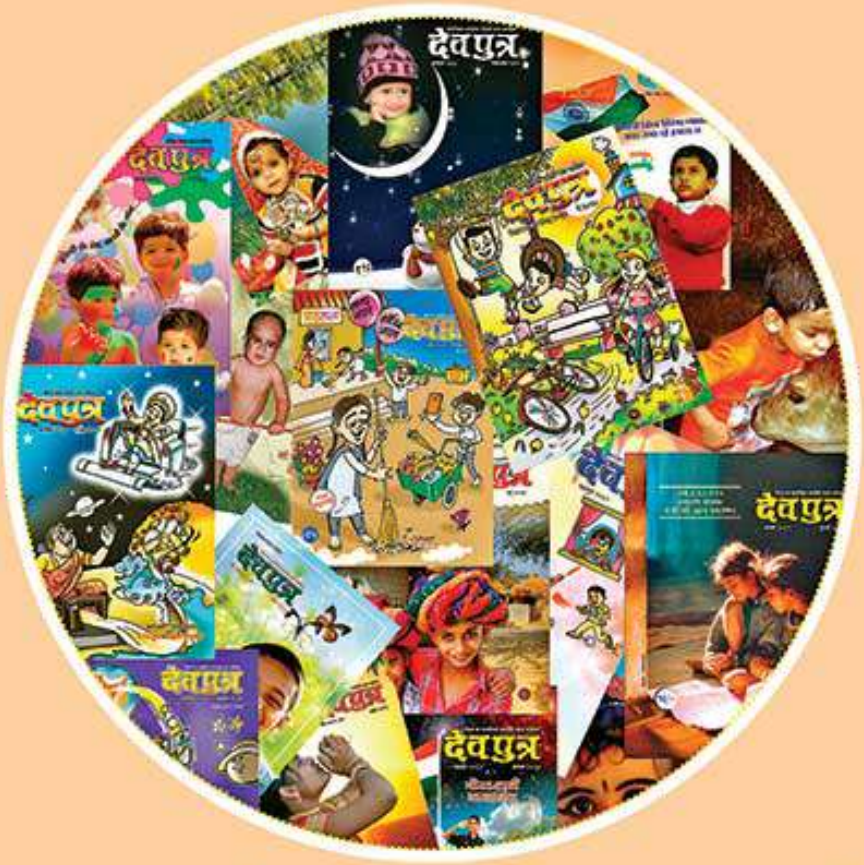

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी